अड़सठ शरद

रवीन्द्र की शरण...

(गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर की अड़सठ कविताओं का
लयात्मक नव गीतों में अनुवाद)

अनुवादक एवं लेखक

सुरेश चौधरी "इन्दु"

शुक्तिका प्रकाशन

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, without written permission from the publisher or author.

- पुस्तक का नाम : अड़सठ शरद रवीन्द्र की शरण...
- अनुवादक एवं लेखक का नाम : सुरेश चौधरी "इंदु"
- © लेखक
- **प्रथम संस्करण : 2021**
- **मूल्य : ₹ 350/- मात्र**
- *शब्द सज्जा :*
  शुक्तिका ग्राफिक्स
- *मुद्रक :*
  मिशका इन्फोटेक, कोलकाता
- प्रकाशक :
  शुक्तिका प्रकाशन
  स्वामित्व :
  ए एण्ड ए इंटरप्राइजेज
  143-डी, सरद बोस रोड, कोलकाता-700026
  प्रबन्ध कार्यालय :
  516/4, बी.एल. साहा रोड, ग्राउन्ड फ्लोर, कोलकाता-700038
  मोबाईल : 9432419815
  ई-मेल : enterprisesaa2019@gmail.com

पुस्तक में दिए सभी चित्र दुर्लभ हैं जिन्हें Pinterest के सौजन्य से लिया गया है।

केशरीनाथ त्रिपाठी
पूर्व राज्यपाल, पश्चिम बंगाल

12–बी, डॉ. लोहिया मार्ग
प्रयागराज–211001

प्रिय श्री सुरेश चौधरी जी,

मुझे आपके द्वारा हिन्दी मे कवीन्द्र रवींद्र नाथ ठाकुर की अड़सठ बंगला कविताओं की लयबद्ध छंदों मे अनुवाद पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ। श्री ठाकुर की कविताओं का चयन जितना सुसंगत तथा औचित्य पूर्ण है उतना ही सुंदर तथा प्रभावी उनका अनुवाद है जो मूल रचनाओं की भावनाओं को संरक्षित रखते हुए उन्मे निहित विचारों को सही ढंग से संप्रेषित करता है। यह आपकी काव्य साधना का प्रमाण है।

एक भाषा की रचना का किसी अन्य भाषा मे अनुवाद साहित्य को विस्तार प्रदान करता है, दूसरों के विचारों से अवगत करता है और चिंतन क्रिया को भी प्रभावित करता है। यह विशेषता रवींद्र नाथ ठाकुर की कविताओं के अनुवाद में भी है। इस अनुवाद का महत्व इसलिए बढ़ गया क्यूंकी मूल बंगला रचना देवनगिरी लिपि मे साथ मे ही प्रकाशित है जिससे पाठकों को रचना के मूल और अनुवाद में व्यक्त भावों के तुलनात्मक अध्ययन मे सुविधा होगी।

आपको मेरी शुभकामनाएं।

शुभेच्छु

16.02.2020 **केशरीनाथ त्रिपाठी**

सोमा बंदोपाध्याय

कुलपति, वेस्ट बंगाल यूनिवर्सिटी ऑफ टीचर्स ट्रैनिंग एजुकेशन प्लानिंग एण्ड ऐडमिनिस्ट्रेशन

अतिरिक्त दायित्व : कुलपति; संस्कृत विश्वविद्यालय

अभिमत

आमि ढालिबो करुणा धारा
आमि माँगिबो पाषाण कारा
आमि जगत प्लाबिया बेड़ाबो गांहिया
आकुल पागोल पारा।।

''करुणा धारा'' से प्लावित वह विशाल साहित्य जिसके सृजनकर्ता थे रवींद्रनाथ, रवींद्र साहित्य के नाम से विख्यात है और आज भी मनुष्य की हर विषम परिस्थिति में उसे सटीक पंथ की दिशा देता है, निरंतर कठिनाईयों से जूझते रहने की प्रेरणा देता है, मनुष्यत्व के लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की इच्छा को बलवती बनाता है। रवींद्र–सागर में एक बार जो अवगाहन करता है, वह बहता ही जाता है, डूबता ही जाता है, पर किनारा नहीं मिलता– इतना विराट विशाल जलधि ा है वो। विश्वकवि की कविताएँ अपनी मार्मिकता भावप्रवणता और विषय–वैविध्य के कारण केवल बंगला भाषी समाज में ही नहीं वरन समस्त भारतीय भाषाओं के काव्य प्रेमियों में समान रूप से समादृत है। बल्कि यह कहना अधि ाक उचित होगा कि कला गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर के गीत न केवल बांग्ला एवं भारतीय साहित्य की अपितु विश्व साहित्य की अमूल्य निधि है, और इसका अनुवाद लगभग हर भारतीय एवं कई विदेशी भाषाओं में उपलब्ध है।

अनुवाद अत्यंत दुरूह और कठिन कार्य है। काव्यानुवाद तो और भी दुस्साध्य है, क्योंकि काव्य का छंदबद्ध अनुवाद एक दुस्तर कार्य माना जाता है। परंतु श्री सुरेश चौधरी 'इंदु' जी ने रवींद्र काव्य को आत्मसात करके उनका जो गीतान्तरण किया है वह अत्यंत रसपूर्ण एवं कर्णप्रिय है। साथ ही विश्वसनीय भी।

श्री सुरेश चौधरी जी से मेरा परिचय हुए लगभग एक दशक हो गया है। सरल–सौम्य, ज्ञानी और शिष्टाचार युक्त उनके कवि–व्यक्तित्व में एक आत्मीय आकर्षण है, जिसमे बड़े दादा की छवि दिखती है मुझे। उनमें सद्भाव और विद्वता का अद्भुत मेल है। वे पेशे से एक आर्थिक विशेषज्ञ (एक चार्टर्ड अकाउंटेंट) होते हुए भी साहित्य विशेषकर काव्य–रस से स्वयं को वंचित नहीं करते। बल्कि उनका दिन ही काव्य चर्चा से शुरू होता है। ऐसे विदग्ध साहित्य प्रेमी अपने को, बंगाल में रहते हुए कैसे कवींद्र रवींद्र से दूर रखते? वरन साहित्य के विद्यार्थी न होते हुए भी कवि–संगीतज्ञ की भक्ति भावना की विमल तरंगों में सदैव डूबते उतरते रहते हैं। कवि रवींद्र और उनके काव्य ने सुरेश चौधरी के कवि मन को इतना प्रभावित किया है कि ''उनका लिखा हर अक्षर उन्हें क्षय होने से बचाते हुए एक अलग रहस्यमय संसार मे ले उड़ा, (सुरेश जी के शब्दों में), शब्दों की गहराई इतनी गहन थी कि डूबता चला गया बस डूबता चला गया ।''

कविवर के प्रति अशेष श्रद्धा और भक्तिभाव उनकी कलम से ये पंक्तियाँ बरबस लिखवा लेती हैं :

''गुरुवर नमन शत शत नमन
साहित्य प्रगल्भ पराकाष्ठा
नव–तरंग अंतस की आस्था''

और संभवतः इसी श्रद्धा और भक्तिभाव का लयात्मक नव गीतों में हिंदी अनुवाद ''अड़सठ शरद'' शीर्षक से, जहाँ रवींद्र की निम्न पंक्तियाँ साकार हो उठती हैं :–

''गीत आनंद का कब पुनः सजेगा
समस्त जग में प्रवण सुर ये सज गए
सब जगह गीत आंनद के बज गए..
गीत आनंद का कब पुनः सजेगा।''

''अड़सठ शरद'' का अध्ययन कर मुग्ध हुए बिना मैं रह नहीं पाई। तत्सम शब्दावली और गहन भावों का जो अनन्य स्वरूप रवींद्र काव्य की विशेषता है, उसे यथावत अक्षुण्ण रखते हुए रवींद्र काव्य का भाषांतर असाध्य नहीं तो दुःसाध्य अवश्य था। परंतु आनंद का विषय यह है कि सुकवि सुरेश जी ने

इस दुःसाध्य कर्म को कर दिखाया। ये कविताएँ बंग भाषा की रीति शैली एवं अर्थ छटा को पूर्णतः ध्यान में रखते हुए भाषांतरित हुई हैं। यही कारण है कि अनुदित कविताओं को पढ़ते समय मूल कविता को पढ़ने का आंनद मिलता है। प्रस्तुत अनुवाद में मूल भावना को सम्पूर्ण रूप से आत्मसात कर उन्होंने हिन्दी में जो अभिव्यक्ति दी है वह गंभीर चिंतन और अथक प्रयास का सराहनीय उदाहरण है। इस स्तुत्य प्रयास के लिए सुरेश जी को हार्दिक बधाई एवं साधुवाद देती हूँ।

रवींद्र की कविताएँ क्षुद्रता से विराटता की ओर, स्वार्थ से परमार्थ की ओर एवं वासना से वैराग्य की ओर अग्रसर होने की प्रेरणा देती हैं जो हमे सदैव आकर्षित करती आई हैं और उसमे ही सुरेश जी ने अपनेजीवन की दिशा को खोज निकाला है। यही कारण है कि केवल अपने आनंद या ख्याति प्राप्त करने के लिए ही नहीं, वरन, समग्र हिंदी जगत को विश्वकवि के सुर में उनकी वाणी सुनाने के भाव से ऐसी साधना उन्होंने की है।

मैं श्री सुरेश चौधरी जी की अनुपम कृति ''अड़सठ शरद'' का स्वागत करती हूँ एवं मुझे विश्वास है कि उनकी निष्ठा कवींद्र रवींद्र की अन्य काव्यग्रंथो का भी भाषांतरण प्रस्तुत कर काव्य एवं संगीत प्रेमियों का समादर प्राप्त करेंगी।

अशेष शुभकामनाओं सहित,

सोमा बंद्योपाध्याय

प्रसंग : अड़सठ शरद

असंभव के संभव : सुरेश चौधरी

'अड़सठ शरद' लब्ध–प्रतिष्ठ साहित्यमर्मज्ञ सुरेश चौधरी जी की एक अनूठी और अप्रतिम रचनात्मक कृति है जो अनुवाद और काव्य सृजन दोनों ही संदर्भ में बहुमूल्य है क्योंकि पहली बात तो यह है कि विश्व कवि रवींद्रनाथ टैगोर की कविताएं इतनी सरल नहीं कि इनको पढ़कर इनके मर्म तक कोई भी पहुंच जाए। वास्तव में गुरुदेव की कविताओं को पढ़कर नहीं बल्कि पारायण कर के ही समझा जा सकता है। क्योंकि इन कविताओं में जो कह दिया गया है उससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण वह है जो अनकहा रह गया है जो अबोला रह गया है। यानी इन कविताओं को समझने के लिए इन कविताओं के शब्दों के नेपथ्य में जो अर्थवान चुप्पी टहल–कदमी करती है उस चुप्पी को सुनना पड़ता है। इस अर्थवान मौन को सुनने की क्षमता को जो उपलब्ध हो गया बुद्ध ने उसे ही श्रमण कहा है। गुरुदेव की कविता के मर्म तक पहुंचने के लिए सचमुच में जिस आर्योपनिष्ठ चेतना की बुनियादी जरुरत होती है उसी श्रमण चेतना का नाम है–सुरेश चौधरी। प्रज्ञा और मेधा के स्तर पर बिना सुरेश चौधरी हुए इन कविताओं से मानसिक संवाद करना और फिर उनका सार्थक अनुवाद करना कठिन ही नहीं असंभव भी है। संभव और असंभव के द्वंद्व समास है सुरेश चौधरी जी। अगर सुरेश चौधरी के रचना लोक की गहरी पड़ताल की जाए तो हम आसानी से यह निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि सुरेश जी एक ऐसी आभ्यांतरिक यात्रा के यायावर हैं जो अन्यथा और नान्यथा, तथाकथित और यथाकथित, परीत और विपरीत को समान मैत्रीभाव से अपने साथ लेकर विचरण करते हैं। सुरेश चौधरी जी का संपूर्ण सृजन मनुष्यता की अविश्रांत यात्रा का ऐसा असमाप्त मंजुल जयघोष है जो प्रकारांतर से उन्हें स्वयं ही शब्द अनुष्ठान का यज्ञ भी बना देता है और योग भी। गुरूदेव रवीन्द्रनाथ की रचनाओं के प्रति इतना तीव्र आकर्षण रहा कि बांग्ला भाषा से सुरेश चौधरी ने पहले जान–पहचान बढ़ाई, रवीन्द्र संगीत में डूबे और फिर रवीन्द्र नाथ

टैगोर के काव्य सिंधु में डुबकी लगा कर अनुवाद के अनेक बेशकीमती माणिक–मोती निकाल कर ले आए। अनुवाद भी इतना नैसर्गिक, इतना सहज और ऋजु–सरल कि लगता ही नहीं कि अनूदित कविताएं पढ़ी जा रही हों। दरअस्ल यह अनुवाद है भी नहीं। यह गुरुदेव की दिव्य कविताओं का भव्य भावानुवाद है। और यह नैसर्गिक भावानुवाद तभी संभव है जब मूल कवि की चेतना का जो चिन्मय है उस चिन्मय को जी लेने की सिद्धि को कोई स्वयं उपलब्ध हो जाए।मूल कवि के अकुंठ अंतस के वैकुंठ की अजस्र अंतर्धारा में जब तक कोई स्नात न हो जाए। वह रवीन्द्र नाथ टैगोर जैसे दार्शनिक कवि की कविताओं का अनुवाद कर ही नहीं सकता। सुरेश चौधरी जी ने यह मुश्किल काम बहुत ही सहजता से कर दिया है। देखा जाए तो यह सहजता ही बहुत कठिन होती है। सहज होना सबसे कठिन काम है। (स़ह़ज) जो हठ और जप सहित योग को सिद्ध हो जाता है वही सहजता को उपलब्ध हो पाता है। और तब उसके लिए असंभव भी संभव हो जाता है। इन अर्थों में सुरेश चौधरी हठयोगी हैं और स्वयं असंभव की संभावना हैं।

अड़सठ शरद में सुरेश चौधरी जी ने अड़सठ वसंत की जगह अड़सठ शरद क्यों कहा यह भी इनकी मंत्रसिक्त चेतना को ही इंगित करता है। हमारे वेदों में साधक के दीर्घायुष्य कामना के लिए जीवेम् शरदः शतम् कहा गया है। ऋषियों ने बसंत को सांसारिकता का और शरद ऋतु को तपस्या और त्याग के प्रतीक में मान्यता दी है। इसलिए सुरेश चौधरी जी के संदर्भ में अड़सठ बसंत की जगह अड़सठ शरद ही ज्यादा उपयुक्त लगते हैं क्योंकि वे अक्षर अनंत के अप्रतिम अनन्य साधक हैं। मेरा तो यह भी मानना है कि एक अच्छा अनुवादक वही है सकता है जो परकाया–प्रवेश विद्या में पारंगत हो। जो सृजन की सूक्ष्म परकाया को अपने भीतर जी सकने की सामर्थ्य रखता हो। जिस शिद्दत से सुरेश चौधरी जी ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की कविताओं को अनूदित किया है ऐसा असाध्य कार्य वह तभी कर सके हैं जब उन्होंने स्वयं अपने में रवींद्र नाथ जी को जिया है। उनकी यह रचनात्मक सामर्थ्य और समर्पण की भावना अभिनंदनीय है और अनुकरणीय भी। जिस स्तर की मूल रचनाएं हैं उसी स्तर का अनुवाद। जिसकी समीक्षा करना इनके गांभीर्य को कमतर आंकना है। वास्तव में यह अनूदित रचनाएं समीक्षा का विषय हैं भी नहीं। इन रचनाओं की समीक्षा नहीं मीमांसा अपरिहार्य है।

सृजन के जिन तुलसी–क्षणों में सुरेश चौधरी ने अपनी श्लोक चेतना से गुरुदेव की कविताओं के शब्दों के गर्भ में पल रहे तात्पर्य को अनुवाद के माध्यम से उद्‌घाटित किया है वो एक तरह से परोक्ष का प्रत्यक्ष में रूपांतरण है। और अनूदित शब्दों के संहरण में पाणिनि की सूत्रबद्धता। अनुवाद में अनु का अर्थ है आंतरिक और वाद का अर्थ है–संवाद। कुल मिलाकर 'अड़सठ शरद' एक तरह से गुरुदेव की रचनाओं के अंतःकरण से सारस्वत ऋषि–संवाद है। और यही तो वह वैशिष्ट्य है जो इस कृति की कालजयी चिरंजीविता को असंदिग्ध बना देता है। सचमुच इस कृति की प्रकृति पाठक की चेतना को शब्द के माध्यम से शब्द के पार ले जाने का एक वैष्णव अनुष्ठान है। और साधु–आमंत्रण भी। इत्यलम्!!

पंडित सुरेश नीरव

(चिंतक–विचारक कवि)

भावानुकूल अनुभूति की सुवासित अभिव्यक्ति

कविगुरु रवींद्रनाथ ठाकुर की प्रसिद्ध का मूल आधार उनकी महानीय कृति 'गीतांजलि' है। गीतांजलि की संवेदना की आधारभूमि कविगुरु के चिंतन का वह पक्ष है, जो मनुष्य की चेतना को विश्व मानव और विश्व को चराचर प्रकृति से जोड़ता है। इस प्रकार से साहित्य एक महत भूमिका का आधान करता है और अक्षर ब्रह्म की भूमिका सौंदर्यमयी और रसवती हो कर प्रिय हो उठती है। कवि गुरु कहते थे – ''सत्य ही मनुष्य का प्रकाश है। इस सत्य के विषय में उपनिषद का कहना हैः आत्मवत सर्वभूतेषु यः पश्यति स पश्यति – जिन्होंने जीव मात्र को अपने समान समझा है, उन्होंने ही सत्य को समझा है; जिन्होंने इस तरह अपने आप में सत्य को जाना है उनमें ही मनुष्यत्व प्रकाशित हुआ है।'' इसलिए अपनी रचनाओं में रवीन्द्र की दृष्टि, कभी भी किसी संकीर्ण सीमा में आबद्ध नहीं हैं। उनकी भावनाओं का क्षेत्र समस्त पृथ्वी और उस पृथ्वी के वासी मनुष्य रहे। इनकी रचनाओं में बारंबार धरित्री, पृथ्वी, धरती, मानुष, मनुष्य, विश्व सत्य, विश्व चेतना जैसे शब्द प्रयुक्त होते रहे हैं; जो कवि गुरु के चिंतन के विराट फलक का दिग्दर्शन कराते हैं। इन्हीं भावनाओं की आगार, अनुभूति प्रवण, लालित्यपूर्ण गीति रचना 'गीतांजलि' में अंकित उनकी अनुभूतियों के प्रवाह को हिंदी भाषा में अपनी भावाकुल अनुभूतियों से अनुरंजित कर अनूदित करने का एक श्रेष्ठ सत्प्रयास कवि श्री सुरेश चौधरी जी ने किया है।

''अष्ट षष्टि शारद आगमनी'' शीर्षक से कवि गुरु की भावाकुल अभिव्यक्तियों को अपनी अनुभूतियों से अनुरंजित कर, अपने चिंतन से अभिसिंचित कर श्री सुरेश चौधरी जी ने एक भिन्न भंगिमा की भाषा में इन गीतों को अनूदित किया है।

अक्षर ब्रह्म की चेतना से अनुप्राणित कविता वह काल यात्री है, जिस की यात्रा चिरंतन है। वह कभी समाप्त नहीं होती। फिर गीतांजलि जैसे भावपूर्ण

रससिक्त और औपनिषदिक चिंतन से युक्त कवि गुरु रवीन्द्र की धर्मबोध एवं सौंदर्यबोध से युक्त गीतों की यात्रा तो चिरंतन होनी ही है।

गीतांजलि को विश्व की अनेक भाषाओं में अनूदित किया गया है। हिंदी में भी अनेक सहृदय कवि चिंतकों ने अपनी वैयक्तिक प्रातिभ दीप्ति से यह प्रयत्न किया है। इसी क्रम में कवि सुरेश चौधरी द्वारा किया गया यह अनुवाद एक विशिष्ट साहित्यिक सृजन है। भाषा एवं साहित्य से अपने अशेष लगाव के कारण कवि सुरेश चौधरी संस्कृत बांग्ला हिंदी सभी भाषाओं में सहजता से अवगाहन करते हैं। साहित्य के अभ्यास एवं स्वाध्याय ने इनकी कलात्मक सृजनात्मकता को वह निखार दिया है, जिसके कारण इनके इन अनुवादों में सौंदर्य की दीप्ति सहज ही दीप्तिमान होती है। संस्कृत साहित्य के आर्ष ग्रंथों के अध्ययन तथा दर्शन के प्रति विशेष अभिरुचि ने इनके चिंतन को एक विशेष दार्शनिक आधार दिया है। इसलिए कवि गुरु की गहरी कविताएं भी इनकी दृष्टि के सम्मुख अपना गंभीर अर्थ व्यक्त करते हुए, सहज ही स्पष्ट हो जाती हैं। अपनी काव्य प्रतिभा के द्वारा उस गंभीर चिंतन को लालित्य पूर्ण एवम् सुंदर, परंतु अधिकांशतः तत्सम शब्दावली में इन्होंने गीतों के रूप में अनूदित किया है।

प्रेम में अनन्यता के बावजूद एक विराट वैश्विक बोध का होना गीतांजलि के गीतों की अपनी विशिष्ट पहचान है। इन अनुवादों में भी वह पहचान उभरकर सम्मुख आई है –

मेरा प्रेम गीत प्राणों से प्यारा
सौरभ द्युति से पुलकित कर दे सारा
निखिल स्वर्ग लोक भूलोक भिगो दे
जग को प्रेम संगीत से पिरो दे।

यहां प्रेम की कितनी विराट कल्पना है कि सिर्फ पृथ्वी लोक ही नहीं बल्कि स्वर्ग लोक से लेकर निखिल सृष्टि – तीनों लोकों तक उसकी व्याप्ति की कामना की गई है। फिर उस अनुराग के सौंदर्य की परिकल्पना सिर्फ रूपात्मक ही नहीं बल्कि गुणात्मक भी है, जिसमें ज्योति की आभा के साथ–साथ सौरभ अर्थात सुवास भी शामिल है।

गीतांजलि के इन 68 अनुवादों में कविगुरु रवींद्रनाथ का सौंदर्य बोध, अपनी पूरी प्रांजलता के साथ प्रकट हुआ है। यह सौंदर्य बोध वस्तुतः मानवीय

एकात्मकता के बोध का ही एक आयाम है। सौंदर्य को सभी मनुष्यों की आंतरिक एकता का बोध कराने वाले तत्व के रूप में अभिव्यक्त किया है। मनुष्य की भेद बुद्धि जब उसके मन में स्व–पर का मिथ्या बोध भर देती है, तो उसके नेत्र प्रकृति के विराट सौंदर्य को देखने से वंचित रह जाते हैं; जबकि यह सौंदर्य मनुष्य के बाह्य जगत के साथ–साथ उसके अंतर्तम तक को आलोकित कर देता है। इन अनूदित गीतों में सौंदर्य की विराट कल्पना, फैंटेसी, उसकी स्पंदित चेतना और मनुष्यता की अनंत परिव्याप्ति सहज रूप से उभर कर सम्मुख आ गई है –

थम जाए मेरी सभी वासनाएं
जब मुझे मिले प्रेम अभ्यर्थनाएं
दुख सुख का विचित्र जीवन सहेगा
छोड़ तुम्हें अन्य कुछ और ना रहेगा
तेरी लीला मुझ में बहुआयामी
मुझ में होगी तेरी लीला स्वामी

– इन पंक्तियों में अत्यंत सहज रूप में प्रकृति और आत्मा की एकात्मकता और आंतरिक लयात्मकता का गीतात्मक प्रस्फुटन हुआ है। आर्ष चिंतन के 'तत–त्वम–असि' की लालित्य पूर्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति हुई है। प्रेम अभ्यर्थनाओं के आलिंगन की कामना में भी स्थूलता की अनुपस्थिति और हार्दिक भावाकुलता चकित कर मुग्ध कर देती है।

आदरणीय सुरेश चौधरी जी संवेदनशील एवं श्रेष्ठ कवि हैं। प्रतिभा व्युत्पत्ति एवं अभ्यास के द्वारा इन्होंने अपनी सृजनात्मकता को निरंतर परिष्कृत एवं परिशोधित किया है। कवि गुरु रवींद्रनाथ के प्रति अपनी असीम श्रद्धा के भाव को व्यक्त करते हुए, श्रद्धेय के प्रति प्रणति निवेदन करते हुए इन्होंने इन 68 कविताओं का जो भावानुवाद प्रस्तुत किया है, वह साहित्य के क्षेत्र में एक पुनीत कार्य है।

गहन भाव बोध की इन कविताओं के विषय में यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि कविगुरु के चिंतन की परिव्याप्ति, उसकी अनुभूतिगम्य गहराई और उसके नाना आयाम इन अनुवादों में भी अभिव्यक्त हो सके हैं। मूल ग्रन्थ के गीतों में अनुवादक ने सहज भाव से संतरण किया है।

भाषा मात्र अभिव्यक्ति का माध्यम ही नहीं होती बल्कि वह समस्त जीवन बोध और सामाजिक संस्कृति की परिचायिका भी होती है। इस दृष्टि से अनुवाद सदैव एक दुष्कर कर्म होता है। यह विशेष प्रतिभा और संवेदनात्मक दक्षता की मांग करता है। इसी संवेदनात्मक दक्षता के साथ श्री सुरेश चौधरी जी ने गीतांजलि के अनुवाद में भारतीय सांस्कृतिक चिंतन के स्वर एवं आर्ष चिंतन की गहराई को लयवती गीतात्मकता में संयोजित किया है। यह कृति एक महत्वपूर्ण सृजनात्मक उपक्रम है, जिसके लिए मैं अनुवादक के प्रति साधुवाद व्यक्त करती हूं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सहृदय समाज में इस कृति का उन्मुक्त भाव से स्वागत किया जाएगा।

राजश्री शुक्ला उपाध्याय

स्व–कथ्य : कवीन्द्र रवीन्द्र शरणम् ....

"आमि ढालिबो करुणा–धारा
आमि भाँगिबो पाषाण कारा
आमि जगत प्लाबिया बेडाबो गहिया
आकुल पागोल पारा।"

"करुण धारा में प्लावित वह विशाल साहित्य जिसके सृजन कर्ता थे रवींद्रनाथ, रवींद्र साहित्य के नाम से विख्यात हैं, और आज भी मनुष्य की हर उस विषम परिस्थिति में उसे सटीक पंथ की दिशा देता है, निरंतर कठिनाईयों से जूझते रहने की प्रेरणा देता है, मनुष्यत्व के लक्ष्य की ओर अग्रसर होने की इच्छा को बलवती बनाता है, रविन्द्र–साहित्य सागर में एक बार जो अवगाहन करता है, वह बहता ही जाता है, डूबता ही जाता है, पर किनारा नहीं मिलता–ऐसा विराट–विशाल जलधि है वह"।

–डॉ. सोमा बंद्योपाध्याय

मूलतः मैं साहित्य का विद्यार्थी कभी नहीं रहा, न ही हिंदी या अन्य किसी साहित्य की विधिवत शिक्षा ली है, संस्कार वश बाल्यकाल से ही धार्मिक ग्रन्थों के प्रति रूचि रही, स्कूल के दिनों में ही बाल्मीकि रामायण, तुलसी रामायण, राधेश्याम रामायण, महाभारत, गीता, कई पुराण इत्यादि पढ़ लिए थे, कुछ कुछ संस्कृत पढना भी आगया था, नाना के घर में विशाल पुस्तकालय था, जिसमे १०००० से अधिक पुस्तकें थी, निराला, गुप्त, दिनकर, प्रसाद, श्यामनारायण पाण्डेय जी इत्यादि के प्रकाशित प्रथम अंक उपलब्ध थे, उन्हें पढ़ डाला था, अतः छायावाद की तरफ विशेष लगाव हो उठा था, प्रांजल शब्दावली विशेष आकर्षित करती, पर पढ़ने का ही आनन्द लेता, लिखने का कभी दुःसाहस नहीं किया। मुझे याद है जब मैं १३ वर्ष का था तब मेरे बड़े जीजा जी श्री नथमल जी से पत्राचार होने लगा था, और उनकी हिंदी का मैं कायल था, शायद मन में कहीं वह एक प्रेरणा भी छिपी पड़ी थी।

पाठ्य पुस्तकों में अन्य लेखों में पढ़ता की रवीन्द्र साहित्य संस्कृति के वह मानक थे जिसे गगन का प्रभाषित रवि कह सकते थे, एक ईश्वर सम छवि अंकित थी, न जाने कितने महान श्री कृष्ण वयम् नुमः तुल्य महामानव

को अंतस की गहराईयों से पूजता, उनकी कृतियों का हिंदी अनुवाद पढ़ता, सच बताऊँ जब हिंदी अनुवाद पढता तब मुझे उनका साहित्य जरा भी आकर्षित नहीं करता, सोचता ऐसी क्या खूबी है जो प्रसाद, निराला, दिनकर गुप्त से ऊपर इन्हें विराजती है, गीतांजली के कई अनुवाद पढ़े पर किसी भी अनुवाद में वह जिज्ञासा समन्वेषण दर्शित नहीं हुई।

साहित्य में जब तक यह अधस्तल समन्वेषण न हो, साहित्य में जब तक बिम्बों की मारक क्षमता न हो, साहित्य के हर शब्द जब तक अंतस को चिर शब्दों के वार से रक्त रंजित न कर दे तो वह साहित्य मेरी नजर में किसी काम का नहीं। मैं रवीन्द्र में उस शोणित वेग को ढूँढ़ रहा था, जो मुझे उनके अनुवाद में सदैव अनुपस्थित दिखा। तब कलकत्ता आगमन हुआ, पढ़ाई के सिलसिले में और बंग भाषा से परिचय होना प्रारंभ हुआ, पर भाषा की बारीकियां सीखना कठिन था बस उसका लुत्फ ही ले सकता था।

तत्पश्चात उद्योग, कॉर्पोरेट जगत की चकाचौंध में खोकर साहित्य से दूर होता चला गया, २००६ में भयानक स्नायु रोग से ग्रसित मुंबई प्रवास एवं चिकित्सा के लिए रहना पडा, पर मन तो अर्थ, वित्त में उलझा था, २०१० में पुनः बीमारी के दौरान शरीर के पूरे लहू को बदलना पड़ा तब बहुत दिनों तक घर में रहना पड़ा पुनः साहित्य प्रेम जगा, और २०११, ८ मार्च महिला दिवस पर बैठे बिठाए एक कविता बन गयी, जो कुछ इस प्रकार थी,

जाग–जाग, हे नारी जाग
जाग–जाग, हे नारी जाग;
तू भारत की नारी, तू जाग!
सहनशील–तू अति धीर–सदृशपृथा,
अनल–मध्य–तपे, तेरी यही व्यथा,
ममता–कोमलता–शीतलता, तेरीकथा
हे नारी जाग–जाग!
दुर्गा बन महिसासुर संघार करे,
माँ टेरेसा बन जन–कल्याण करे,
तू उज्ज्वल देदिप्यप्रमाण करे,
हे नारी जाग–जाग!

सिन्दूर रक्षा–सावित्री परीक्षा–यही शिक्षा,
करे देश उत्थान–पुरुष समान,
दूध महान–तेज भानु समान !
जाग–जाग, हे नारी जाग;
तू भारत की नारी, तू जाग!

फिर कुछ कुछ लिखना प्रारम्भ किया, मित्र तो यह भी हास्य में कहने लगे कि रक्त जो बदल कर चढ़ा था वह कई कवियों का रहा होगा तभी एक आर्थिक विशेषज्ञ, एक चार्टर्ड अकाउंटेंट कविता लिखने लगा।

मेरी कवितायेँ खास कर बाल्यकाल से प्रांजल तत्सम शब्दों का प्रेम और उसका प्रयोग लोगों को पसंद आ रहा था, मुझे स्पष्ट मेरे लेखन में निराला, प्रसाद की झलक दिखती, पन्त और महादेवी को मैं अपने में ढूँढ़ता दिनकर और गुप्त मेरे प्राण में थे, और इन सबके पीछे जो प्रेरणा स्रोत थे वे थे मेरे वेदों के, ग्रंथों के अध्यन।

२०१२ में कोलकाता वापस आ गया तब रवीन्द्र को पढने का और समझने का प्रयत्न करने लगा, उनकी कई कृतियों का बंगला पर देवनागिरी लिपि में लिखा साहित्य पढने का प्रयास किया, यह नहीं था की मैं बंगला लिपि से बिलकुल अनभिज्ञन था पर उतना धारावाह भी नहीं पढ़ सकता, मुझे गीतांजली, पथ के गीत, गीतबितान, कुछ काव्य संग्रह पढने को मिले कुछ देवनागिरी लिपि में नहीं मिले पर आंग्ल लिपि में मिले उन्हें भी पढने का यत्न किया।

कवि जिस भाषा में सोचता है और जब वह उसी भाषा में लिखता है तब उसके सर्जन में आनंद सागर की उर्मियाँ मन उद्वेलित कर देती हैं, यह सात्विक सत्य है हम मन में विचार किसी भाषा में उत्सर्जित करें और उन विचारों को अन्य भाषा में परिवर्तित करें तो वह सच्चाई कदापि साहित्य में नहीं आ सकती, इसीबात का अंतर मुझे मूल लेखन और अनुदित लेखन में मिला।

ज्यूँ ज्यूँ रवीन्द्र को पढने लगा त्यूं त्यूं उनका लिखा हर अक्षर मुझे क्षर होने से बचा एक अलग रहस्यमय संसार में ले उड़ा। शब्दों की गहराई इतनी गहन थी की डूबता चला गया बस डूबता चला गया।

तब रवीन्द्र के प्रति कुछ पंक्तिया बरबस निकल पड़ीं:

गुरुवर नमन शतशत नमन
साहित्य प्रगल्भ पराकाष्ठा
नव–तरंग अंतस की आस्था,
विभावरी मंडित व्योम पर
विधु सम अवभासित
जन गण मन अधिनायक
सत्यनिष्ठ जन नायक
विशालता का उद्‌गम
दूरदर्शिता का परिचायक,
नवरचना संवाहक
नव प्रेरणा संचारक
हृदयंगम रोचित कला प्रसारक,
विश्व भारती विचारक,
चित्र कला, संगीत कला, साहित्य कलाधिपति
अद्‌भुत विलक्षण प्रतिभाधिपति,
गीत गीतांजलि भाव भावांजलि अतिमति
पुरुष्कृत कलावती
भारत भाल के द्यूतित श्रृंगार
परमात्मा के अप्रतिम उपहार,
नमस्कार नमस्कार नमस्कार !

इन पंक्तियों से मैंने अपनी पुस्तक बुलबुले सी जिंदगी गुरुदेव कवीन्द्र रवीन्द्र को समर्पित की।

एक लहक सी थी जिसे शांत करना अनिवार्य था पर कार्य मुझ जैसे असाहित्यिक व्यक्ति के लिए असंभव सा था, वह लहक ललक में परिवर्तित हो रही थी की मैं चुनिन्दा कविताओं को गीत में खास कर नवगीत में अनुवाद कहूँ जो गेय भी हों जो रवीन्द्र के कथन के मूल हृदय को धड़कता रखे। तब इस बीच मित्र आशुतोश की एक पोस्ट पढ़ी फेसबुक पर "आज खेला भंगार

खेलिबे...” इस गीत का अनुवाद यूँ ही बैठे बैठे करने लगा इसे सात बार किया पर मन में संतुष्टि नहीं हुई, अनुवाद गीत में भी ढल गया अनुवाद अक्षर अक्षर भी हो गया पर जो रवीन्द्र के भाव थे वे उसमे नहीं उपज रहे थे, कई प्रयत्नों के बाद मूलभाव के हृदय के पास पहुंचा कि नहीं यह तो आप सुधीजन ही बताएँगे।

दूसरा गीत जो मुझे अत्यधिक पसंद था वह था माया मोन बिहारीणी ......इसमें भी वही बात हुई फिर लिखने के बाद सोचा जब तक इसे रवीन्द्र संगीत में न ढाला जाय तब तक गीत की प्रमाणिकता नहीं स्थापित होगी, बहुत प्रयत्न के बाद मुझे बंगला संगीतकार श्री प्रतिक चक्रवर्ती मिले जिन्होंने मेरे लिखे गीत को संगीत दे कर उसे जीवंत किया, गीत को एक भोली मासूम और नयी आवाज देनी थी तब मुझे एक भजन गाती बालिका दिखी उससे संपर्क किया उसे बुलाया कई दिनों के संयुक्त प्रयास संगीतकार और गायिका वाग्मी त्रिवेदी द्वारा और परिणाम स्वरूप एक खुबसूरत गीत का सृजन।

इस तरह अनुवाद, अनुदित करने का क्रम या भावानुवाद जो कहें वह प्रारंभ हुआ, इस अनुवाद को समय समय पर छोटी बहन डॉ. सोमा बंद्योपाध्याय को भी भेजता रहा, उनका उत्साह वर्धन मुझे संबल प्रदान करता रहा। इस प्रकार यह पुस्तक मेरे अड़सठवें जन्म दिन पर प्रकाशित करना चाहता था, परन्तु विभिन्न कारणों से कुछ विलम्ब हुआ और आज यह मूर्त रूप से आपके समक्ष है।

समय समय पर पुस्तक की चर्चा मेरे प्रेरणास्रोत श्री केशरीनाथ जी त्रिपाठी (भूतपूर्व राज्यपाल पश्चिम बंगाल) से भी करता रहा, उनका आशीर्वचन मेरे लिए गीताज्ञान सदृश है। मेरी प्रबल इच्छा थी कि पुस्तक का विमोचन उनके कर कमलों द्वारा हो।

पुस्तकों की श्रृंखला में यह मेरी २४ वीं पुस्तक है पर सच कहूँ जो संतुष्टि प्रस्तुत पुस्तक के प्रकाशन से हो रही है वह अवर्णनीय है। मैं उन हर मित्र साहित्य वरिष्ठों का नमन करता हूँ जिनकी प्रेरणा मुझे लिखने में संबल प्रदान करती है।

अंत में मैंने एक गीत गुरदेव के भावों को लेकर लिखने का प्रयत्न किया है उसे प्रेषित कर रहा हूँ:

तेजस रूपलिए प्रभु, द्वार मेरे आना
नाथ तमस अंतस का, सूरज बन मिटाना
तेजस.....

अंदर सरिता में जब, बाढ़ सी आती है
आशाओं का मर्दन, नित्य कर जाती है
ले वारि मेघ से तुम, छटा प्रिय बिखराना
तेजस....

अन्तर्घट सूखा हो, हृदय पट भूखा हो
स्नेह रीत चुका हो, मनुज मन रूखा हो
घुमड़ घुमड़ नभघन से, प्रीत जल बरसाना
तेजस....

सपनो के सागर में, भर कल्पना गागर
तुषार आच्छादित मन, खुशियाँ मधुर पाकर
झूम झूम नृत्य करे, प्रकृति पियूष लाना
तेजस.....

सुख दुख लहरें आती, आती चली जाती
जलधि तट हेम राशि, मधु छटा बिखराती
सस्मित आनन तेरा, यूँही मुस्कराना
तेजस.....

अनुक्रमणिका

1. आज खेला भांगार खेला खोलिबे आय... 24
2. मेघ बोलेछे जाबो जाबो रात बोलेछे जाई 26
3. आमार माथा नत कर दाओ हे तोमार चरण धूलार तले 28
4. आमि बहु वासनाय प्राणपणे चाइ बंचित करे बांचाले मोरे 30
5. ओरे माझी, ओरे आमारमानव जन्मतरीर माझि 32
6. अयि भुवन मन मोहनी 34
7. विपदा मोरे रक्षा कर ए नहे मोर प्राथना 36
8. प्रेमे प्राणे गाने गंधे आलोके पुलके 38
9. तुमि नव नव रूपे एस प्राणे 40
10. आवार एरा घिरेछे मोर मन 42
11. माया बोनो बिहारिणी होरिणी 44
12. आमार माझे तोमार लीला हवे 46
13. आनंदेरि सागर थेके एसेछि आज वाना 48
14. तोमर सोनार थालाय साजाव आज 50
15. जोदी तोर डाक शुने केयू ना एशे एकला चोलो रे 52
16. आमरा वन्धेछि काशेर गुच्छ, आमरा गेंथेछी शेफाली माला 54
17. जननि, तोमार करुण चरणखानि 56
18. जगत जुड़े उदार सुरे आनंदगान बाजे 58
19. जेडिये गेछे सरू मोटा दुटो तारे 60
20. जीवन यखन शुकाये याय करुना धाराय एसो 62
21. तोरा शुनिस नि कि शुनिस नि तार पाएर ध्वनि 64
22. सुन्दर, तुमि एसेछिले आज प्राते 66

23. यतवार आलो ज्वालाते चाइ निवे याय वारे वारे 68
24. विश्व यखन निद्रागमन, गगन अन्धकारय 70
25. छाडिस ने धरे थाक एंटे, ओरे हवे तोर जय 72
26. भेवेछिन मने या हवार तारि शेषे 74
27. मधोबी हठात कोथा होते एलो फागुन दिनेर स्रोते 76
28. दिवस यदि सांग हल, ना यदि गाहे पाखि 78
29. कोथाय आलो, कोथाय आलो 80
30. आज वरषार रूप हेरि मानवेर माझे 82
31. आमार खेला यखन छिल तोमार सने, तखन के तुमि ता के जानत 84
32. आई ये तरी दिल खुले 86
33. उड़िए ध्वजा अभ्रभेदी रथे 88
34. Where have I come from where did youo pick me up 90
35. एक टुकु छोंवा लागे, एक टुकु कौथा शूनि 92
36. ओगो कांगाल, आमारे कांगाल कोरेछे 94
37. चाइ गो आमि तोमारे चाइ, तोमाय आमि चाइ 96
38. आमार ए प्रेम जय तो भीरु, जय तो हीनबल 98
39. आरो आघात सयिवे आमार 100
40. येथाय थाके सवार अधम दीनेर हते दीन 102
41. दया दिए हवे गो मोर जीवन धुते 104
42. एई तो तोमार प्रेम, ओगो हृदयहरण 106
43. धाय येन मोर सकल भालोबासा 108
44. नयन आमार रूपेर पुरे 110
45. एवार नीरव करे दाओ हे तोमार 112
46. मार माझे, असीम, तुमि 114
47. झर आनंद आमार पर 116

48. चित्त आमार हाराल आज 118
49. शेषेर मध्ये अशेष आछे 120
50. सभा यखन भान्वे तखन शेषेर गान कि यावव गेये 122
51. मन के, आमार कायाके 124
52. आछे आमार हृदय आछे भरे 126
53. प्रभु गृह हते आसिले येदिन, वीरेर दल 128
54. तारा दिने बेला ऐसेछिल 130
55. शरते आज कोन अतिथि, एल प्राण द्वारे 132
56. से ये पाशे एसे वसेछिल, तवु जागि नि 134
57. मन करि एइखाने शेष 136
58. चिर जनमेर वेदना, ओहे चिर जीवनेर साधना 138
59. मेनेछि हार मेनेछि 140
60. या दियेछ आमार प्राण भरि 142
61. आज वारि झरे झर झर भरा बादरे 144
62. रूप सागरे डूब दियेछि अरूप रतन आशा करि 146
63. संसारेते आर–याहारा आमाय भालोवासे 148
64. लेगेछे अमल धवल पाले मंद मधुर होओया 150
65. मुख फिराए रव 152
66. भेवेछिनु मने या हवार तारि शेषे 154
67. गान गाओयाले आमाय तुमि कतइ छले ये 156
68. बोरिशो धरा–माझे शान्तिरो वारि 158
69. आज धानेर खेते रोद्र–छायाय लुकोचुरी खेला 160

अड़सठ शरद

1. आज खेला भांगार...

आज खेला भांगार खेला खेलिबे आय...

आज खेला भंगार खेला खेलिबे आय
सुखेर बासा भेंगे फेलिबे आय।

मिलनोमालार आज भंधान तो टुटबे
फागुन दिनेर आज स्वप्नों तो छुटबे
उधाओ मोनेर पाखा मेलिबे आय।

अष्टोगिरीर आई शिखरचुरे
झारेर मेघेर आज ध्वजा उड़े
कालबैशाखीर होबे जे नाचों
साथे नाचूक तोर मोरोन बनाचों।

हासी क्रंदन पाए थेलिबि आय।

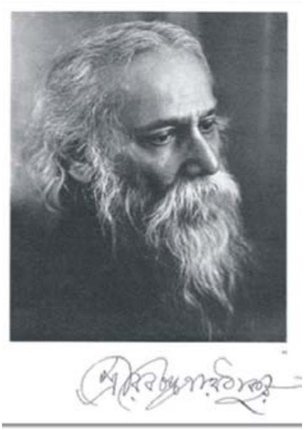

खेल समापन खेलें॥

कैसा आज खेल जीवन ये
समाप्त करें इस के झमेले
आओ सभी मिल बैठ खेलें
मिल साथ साथ खुशियाँ ले लें,
सुख के नीड़ झेलें
खेल समापन खेलें॥

मिलन हार बंधन टूटेंगे
फागन के सपने छूटेंगे
टूटे सपनों की जकड़न है
उड़ जाने को पंख पावन है
मन के पर अलबेले
खेल समापन खेलें।

अस्ताचल के उच्च शिखर पर
मेघों की झंझा के ऊपर
उड़े ध्वज बादल के फर फर
काल बैशाखी करे सर-सर
जीवन मरण उझेलें
खेल समापन खेलें।

हँसना रोना तो पग तले
हँसना रोना तो पग तले।
आ सबके हों मेले
खेल समापन खेलें
खेल समापन खेलें।

2. मेघ बोलेछे जाबो...

मेघ बोलेछे जाबो जाबो रात बोलेछे जाई
सागर बाले कुल मिलेछे आमि तो आर नाई

दुखे बाले रोइनु छुपे ताहार पाएर छिन्नोरुपे
आमि बाले मिलाई आमि किछु ना चाई

भुबन बोले तोमर तारे आछे बोरोनमाला
गगन बाले तोमार तारे लाक्खो प्रदीप जाला

प्रेम बाले जे जूगे जूगे तोमार लागी आछि जेगे
मोरों बोले आमि तोमार जिबोन्तारी बाई।

मेघ अब कह रहे रुकें नहीं बह रहे

कह रही रात भी, साथ मैं जा रही
वारिद उड़ान में, है रात भी बही
बोल सागर रहा पा किनारा लिया
ना चाह कुछ बची, जीवन मरण यहीं आ

दुःख हैं समंदरकिये मैंने अन्दर
छिन्न रूप गही, जुबां पर न रही,
निज से बता रहा मुझमें मैं बस हाँ.....
अधिक न चाह बची, गलत या हो सही।
जग है बोल रहा है खुशियाँ यहाँ
तुम्हारे लिए ला, उपहार मैं चली, वारिद...
गगन तेरे लिए जला हजारों दिए
समर्पण कर रहा, बात कुछ अनकही।

प्रीत मेरी कहे प्रेम पीड़ा सहे
प्रतिक्षा युग की, अब न जाये सही,
मृत्यु ने बात कही राह मैं दिखा रही
तुम्हारी तारिणी, मैं बन अनुग्रही।

3. आमार माथा नत कर...

आमार माथा नत कर दाओ हे तोमार चरण धूलार तले
सकल अहंकार हे आमार डुबाओ चोखेर जले।

निजेरे करिते गौरव दान
निजेरे केवलि करि अपमान
आपनारे शुधु घेरिया घेरिया घूरे मरि पले पले
सकल अहंकार हे आमार डुबाओ चोखेर जले।

आमारे ना येन करे प्रचार आमार आपन काजे
तोमारे इच्छा करो हे पूर्ण आमार जीवन माझे।
याची हे तोमार चरम शांति
पराने तोमार परम कांति,
आमारे आडाल करिया दाडाओहृदयपद्मदले
सकल अहंकार हे आमार डुबाओ चोखेर जले।

हे प्रभो इतनी कृपा कर दीजिये
शीश मेरा चरण में धर लीजिये
दीजिये इस पाद रज को माथ पर
आंसुओं में दर्प मेरे पीजिये।

स्वयं करता स्वयं गौरव गान मैं
नाथ करता मात्र निज अपमान मैं
आप केवल घेरते ही घेरते
मृत्यु मेरी आप पल पल उलझिये
आंसुओं में दर्प मेरे पीजिये।

स्वयं अपना तो प्रचार न नाम हो
आपके द्वारा हमारा काम हो
आपकी इच्छा करूँ पूरी यहाँ
जीवन समर मध्य शांति सींचिये
आंसुओं में दर्प मेरे पीजिये।

दो मुझे आ शांति चरम प्रभो सदा
दो मुझे आ कांति परम प्रभो सदा
आ खड़े हो पास मेरे लो उठा
दे सहारा उर कमल में रीझिये
आंसुओं में दर्प मेरे पीजिये।

4. आमि बहु वासनाय...

आमि बहु वासनाय प्राणपणे चाइ बंचित करे बांचाले मोरे !
ए कृपा कठोर संचित मोर जीवन भरे।

ना चाहिते मोरे या करेछ दान,
आकाश आलोक तनु मन प्राण,
दिने दिने तुमि नितेछ आमाय से महा दानेरइ योग्य करे,
अति इच्छार सङ्कट ह'ते बांचाये मोरे।

आमि कखनो वा भुलि, कखनो वा चलि, तोमार पथेर लक्ष्य धरेय
तुमि निष्ठुर सन्मुख हते य ओ ये सरे!

ए ये तव् दया जानि जानि हाय
निति चाओ वले फिराओ आमाय
पूर्ण करिया लवे ए जीवन तवे मिल्नेरई योग्य करे
आधा-इच्छार संकट हते बांचाये मोरे।

आमि बहु वासनाय प्राणपणे चाइ।

है प्राणों से प्यारी
वासनाएं हमारी
बचा लो हमें प्रभु संकट से तत्पर
ऐसी कृपा कठोर करो जीवन भर।

बिन मांगे मुझे दिया
नभ उजास मन बगिया
तन प्राण दे कर दिन प्रतिदिन बनाया
अति इच्छा संकट से मुझे बचाया
मुझ दीन को महा दान के योग्य कर
ऐसी कृपा कठोर करो जीवन भर।

कभी तुम्हे भूल गया
कभी तुम्हे छोड़ चला
छिप जाते तुम निष्ठुर सन्मुख तत्पर
ऐसी कृपा कठोर करो जीवन भर।

ये दया समझ तेरी
मिलेगी मुझे मेरी
लौटा कर तुम पूर्ण करोगे जीवन
अपूर्ण इच्छा संकट से बचके तन
मिलने की योग्यता समर्पण देकर
ऐसी कृपा कठोर करो जीवन भर।

5. ओरे माझी, ओरे...

ओरे माझी, ओरे आमारमानव जन्मतरीर माझि,
शुनते कि पास दुरेर थेकेपारेर वाशि उठ्छे वाजि।

तरी कि तोर दिनेर शेषे
ठेकवे एवार घाटे एसे।
सेथाय़ संध्या-अन्धकारे
देय कि देखा प्रदीपराजि।

येन आमार लागछे मने
मंद मधुर ऐइ पवने
सिन्धुपारेर हासिटि कार
आंधार वेगे आसछे आजि।

आसार वेलाय कुसुम गुलि
किछु एनेछिलेम तुलि,
येगुलि तार नवीन आछे
ऐईवेला ने साजिए साजि।

ओरे माझि, ओरे आमार माझि....

मेरी जीवन नौका लगा उस पार ओ मांझी
इस मानव जीवन के तरण हार ओ मांझी
बुला दूर से रही पास सुन
उस पार की मदिर बंशी धुन।
उस पार की मदिर बंशी धुन।

दिन ढलने से पहले रहते हुए हमारे
मेरी नांव पहुंचेगी क्या नदिया किनारे
क्या दिखेंगे मुझे संध्या के अंधियारे
चमकते सारे तारा मंडल के सितारे
दीप से प्रज्वलित ये प्रसून
उस पार की मदिर बंशी धुन।

लगे ऐसा मन में की मंद मधुर पवन में
उपहासित करता सरिता पार से गगन में
तिमिर यहाँ भेजा जा रहा सुमन में चमन में
साथ लाया ताजे फूल और कलियाँ मन में
सजा टोकरी बेला की सुन
उस पार की मदिर बंशी धुन।

6. अयि! भुवन मन मोहनी

अयि! भुवन मन मोहनी
निर्मल सूर्य करोज्ज्वल धरणी
जनक-जननी-जननी।। अयि...

अयि! नली सिंधु जल धौत चरण तल
अनिल विकंपित श्यामल अंचल
अंबर चुंबित भाल हिमाचल
अयि! शुभ्र तुषार किरीटिनी।। अयि...

प्रथम प्रभात उदय तव गगने
प्रथम साम रव तव तपोवने
प्रथम प्रचारित तव नव भुवने
कत वेद काव्य काहिनी।। अयि...
चिर कल्याणमयी तुमि मां धन्य
देश-विदेश वितरिछ अन्न
जाह्नवी, यमुना विगलित करुणा
पुन्य पीयूष स्तन्य पायिनी।। अयि...

अयि! भुवन मन मोहिनी।

हे भुवन मन मोहनी
तू जनक-जननि-जननी।

भानु की निर्मल उज्ज्वलता को धर
अम्बुधि जल धोते चरण निरंतर
प्रचंड वेग पवन श्यामल तत्पर
चूम रहा हिमाचल भाल अम्बर
शुभ्र तुषार किरिटिनी
हे भुवन मन मोहनी

होता प्रथम प्रभात तेरे गगन
प्रथम संध्या भी होती तपोवन
प्रथम ज्ञान प्रचार नवोदित भुवन
वेद काव्य कहने वाली वंदन
चिर कल्याणी मालिनी
हे भुवन मन मोहनी

यमुना मन्दाकिनी सरस धारा
देश विदेश बढे ज्ञान हमारा
करुणा मयी सलिल जल विस्तारा
अमृत पिलाती पुन्य भूमि निस्तारा
तू जनक-जननि-जननी
हे भुवन मन मोहनी।

7. विपदा मोरे रक्षा कर...

विपदा मोरे रक्षा कर ए नहे मोर प्राथना
विपदे आमि ना येन करि भय।
दुःख तापे व्यथित चित्ते नाइ वा दिले सात्वना,
दुःखे येन करिते पारि जय।

सहाय मोर ना यदि जुटे
निजेर वल ना येन टूटे,
संसारेते घटिले क्षति लभिले शुधु वंचना
निजेर मने ना येन मानि क्षय।

आमारे तुमि करिवे त्राणए नहे मोर प्राथना,
तरिते पारि शकति येन रय।

आमार भार लाघव करिनाइ वा दिले सात्वना,
बहिते पारि एमनि येन हय।

नम्र शिरे सुखेर दिने
तोमारि मुख लइव चिने
दुःखेर राते निखिल धरा ये दिन करे वंचना
तोमारे येन ना करि संशय।

मेरी विपदाओं से मुझे बचा दे।
संकट के भय से प्रभु मुक्त करा दे
प्रार्थना नहीं है यह, हक दिलवा दे

दुःख दर्द से संतप्त चित्त मेरा
न कोई सांत्वना न सहारा तेरा
दुखों के समंदर से मुझे निकालो
बचा लो प्रभु विपत्तियों से बचा लो।
इस भांति समन्दर के पार लगा दे

यदि न मिले कोई तुम्हारा सहारा
मनबल न टूटे कभी, न रहूँ हारा
पूरे संसार को किसने संहारा
हानियों में पले यह जीवन सारा।
मनोबल दे मेरा जीवन सजा दे

आ हे प्रभु तुम रक्षा करो हमारी
अधिकार है, की न प्रार्थना तुम्हारी
मेरे जीवन के भार को घटा कर
सांत्वना के उपकार को मिटा कर।
जीवन पथ पर आगे मुझे बढ़ा दे

इतनी मनो-शक्ति मैं निज में लाऊं
सुख पाकर भी नम्रता न खो पाऊं
छवि तुम्हारी कभी हम भूल न पायें
दुःख की रातें निखिल अवनी छाये।
नित हानि छोड़ संशय-रिक्त बना दे

8. प्रेमे प्राणे गाने गंधे...

प्रेमे प्राणे गाने गंधे आलोके पुलके
प्लावित करिया निखिल द्युलोक भूलोके
तोमार अमल अमृत पडिछे झरिया।

दिक् दिके आजि टूटिया सकल बंध
मूरति धरिया जागिया उठे आनंद,
जीवन उठिल निविड़ सुधाय भरिया।

चेतना आमार कल्याण-रस सरसे
शतदल सम फुटित परम हरसे
सब मधु तार चरणे तोमार धरिया।

नीरव आलोके जागिया हृदयप्रान्ते
उदार उषार उदय-अरुण-कांति,
अलस आँखिर आवरण गेल सरिया।

मेरा प्रेम गीत प्राणों से प्यारा
सौरभ द्युति से पुलकित कर दे सारा
निखिल स्वर्गलोक भूलोक भिगो दे
जग को प्रेम संगीत से पिरो दे।

बरस रही तेरी अमल अमृत धारा
मेरा प्रेम गीत प्राणों से प्यारा।

चहुँ दिश के अब हर बंधन तोड़ कर
सजीव मूरत के आनंद जोड़ कर
जीवन सघन अमृत से सराबोर कर
चेतना कल्याण सुधा पर मोड़ कर

शतदल सा प्रस्फुटित हो मन हमारा
मेरा प्रेम गीत प्राणों से प्यारा।

रख दिया सभी मधु आपके चरण पर
नीरव आलोक हृदय प्रान्त वरण कर
उदार ऊषा की अरुण कांति उदित हो
अलसाई आँखों से अनावरित हो।

यह यवनिका मोह की बारम्बारा
मेरा प्रेम गीत प्राणों से प्यारा।

9. तुमि नव नव रूपे एस प्राणे

तुमि नव नव रूपे एस प्राणे
एस गंधे वरणे, एस गाने।

एस अंगे पुलकमय परशे,
एस चित्ते सुधामय हरसे,
एस मुग्ध मुदित दुनयाने
तुमि नव नव रूपे एस प्राणे।

एस निर्मल उज्जवल कान्त
एस सुन्दर स्निग्ध प्रशांत
एस एस हे विचित्र विधाने।

एस दुःख सूखे एस मर्मे
एस नित्य नित्य सब कर्मे
एस सकल कर्मे अवसाने
तुमि नव नव रूपे एस प्राणे।

आ तुम प्राणों में नए नए रूप लिए
नव गंध, नव शब्द, नव छंद अनूप लिए।

आ मेरे अंगों में पुलकित स्पर्श लिए
आओ अंतस में अमिय युक्त हर्ष लिए
मुग्ध मुदित नयनों में मधुर स्वरूप लिए
उज्ज्वल निर्मल कान्त स्नेही कूप लिए।

आ तुम प्राणों में नए नए रूप लिए
नव गंध, नव शब्द, नव छंद अनूप लिए।

आओ आओ प्रभु के विचित्र विधान में
सुख में दुःख में अंतर के प्रावधान में
आ नित्य नित्य कर्मों में प्रतिरूप लिए
आ सब कर्म अवसान में छाँव धूप लिए।

आ तुम प्राणों में नए नए रूप लिए
नव गंध, नव शब्द, नव छंद अनूप लिए।

10. आवार एरा घिरेछे मोर मन

आवार एरा घिरेछे मोर मन
आवार चोखे नामे ये आवरण।

आवार ए ये नाना कथाई जमे,
चित्त आमार नाना दिकेई भ्रमे,
दाह आवार वेडे ओठे क्रमे,
आवार ए ये हाराई श्री चरण।

तव नीरव वाणी हृदयतले
ड़ोवे ना येन लोकेर कोलाहले।

सवार माझे आमार साथे थाको,
आमाय सदा तोमार माझे ढाको,
नियत मोर चेतना-परे राखो
आलोके भरा उदार त्रिभुवन।

फिर मेरे मन को घेरा, छाया दृगों में अँधेरा।
बातें फिर वही पुरानी, हृदय पर थी मंड़रानी
दाह बढती ही जा रही, पुनः स्थान कहाँ पा रही
श्री चरणों में डाल डेरा।
फिर मेरे मन को घेरा
छाया दृगों में अँधेरा।।

मूक हृदय वाणी तल में, जग के इस कोलाहल में
कहीं न डूबे ध्यान रहे, हर संग का मान रहे
तुम मुझ को सदा ढक कर, मेरे चेतन पर रख कर
सृष्टि पर उदार सबेरा,
फिर मेरे मन को घेरा
छाया दृगों में अँधेरा।।

11. माया बोनो बिहारिणी होरिणी

माया बोनो बिहारिणी होरिणी
गोहोनो सोपानो सोंचारिणी
केनो तारे धोरिबारे कोटि पोन ?
ओकारोन ?

थाक थाक निजो मोने दुरुते
आमि सुधु बंसुरिरे शुरेते
पोरोशो कोरिबो ओर प्राणों मन
ओकारोन ?

माया बोनो बिहारिनी.........
चोमोकिबे फागुनेरो पोबोने
पोशिबे आकाश बानी श्रोबोने
चित्तो आकुल होबे अनुखोन
ओकारोन ?

दूर होते आमि तारे साधिबो
गोपोने बिरोहो डोरे बांधिबो
बंधोनो बिहोनो सेई-जे-बाधोन
ओकारोन ?

चंचल हिरणी सा मन मेरा
माया वन में करे बसेरा
रहते समाए से मेरे गहन सपनों अंदर
अकारण क्यूँ उसे पकड़ना चाहूँ निरंतर

स्नेहिल सपन छाया घनेरा
चंचल हिरणी सा मन मेरा
माया वन में करे बसेरा।

मन में रहने दो रहने दो
दूर से ही इसे कहने दो
सर्व-भूत जग आया मैं बन बांसुरी की धुन
अकारण क्यूँ मैं प्राणों को स्पर्श करता सुन

भुवन गीत यह अद्भुत तेरा
चंचल हिरणी सा मन मेरा
माया वन में करे बसेरा।

फागन के मद पवन झकोरे
स्वर्ग नभ की वाणी बटोरे
कर दूँ समर्पण विचलित मेरा चित्त होगा
अकारण क्यूँ अब और अधिक आलोड़ित होगा

अंतस आया गहन अँधेरा
चंचल हिरणी सा मन मेरा
माया वन में करे बसेरा।

देखूंगा दूर होते तुम्हे
रात सपनो में खोते तुम्हे
विरह के बंधन में बांध लूंगा चुपके से
अकारण क्यों बंधन अबंधन छूटते से

अनुबंध हीन चित्त लुटेरा
चंचल हिरणी सा मन मेरा
माया वन में करे बसेरा।

12. आमार माझे तोमार लीला हवे

आमार माझे तोमार लीला हवे
ताइ तो आमि एसेछि एई भवे।

एई घरे सब खुले यावे द्वार,
घुचे यावे सकल अहंकार,
आनंदमय तोमार ए संसारे
आमार किछु आर बाकि ना रवे।

मरे गिये वांचव आमि, तवे
आमार माझे तोमार लीला हवे।

सब वासना यावे आमार थेमे
मिले गिये तोमारि एक प्रेमे,
दुःख सुखेर विचित्रे जीवने
तुमि छाडा आर किछु ना रवे।

मुझमें होगी तेरी लीला स्वामी
इस हेतु ही आया मैं अंतर्यामी।

आवास द्वार खुल जायेंगे सारे
समस्त अहंकार मिटेंगे हमारे
कितनी आनंद दायक सृष्टि तेरी
आकांक्षायें बचेंगी न कुछ मेरी।

मर कर भी जी रहा मैं अपथगामी
मुझ मे होगी तेरी लीला स्वामी।

थम जाएँ मेरी सभी वासनायें
जब मिले मुझे प्रेम अभ्यर्थनाएं
दुःख सुख का विचित्र जीवन सहेगा
छोड़ तुम्हे अन्य कुछ और न रहेगा।

तेरी लीला मुझमे बहु आयामी
मुझ में होगी तेरी लीला स्वामी।

13. আনন্দেরি সাগর থেকে...

আনন্দেরি সাগর থেকে এসেছি আজ বান।
দাঁড় ধরে আজ বস রে সবাই টান রে সবাই টান।

বোঝা যত বোঝাই করি
করবরে পার দুখের তরী,
ঢেউয়ের পরে ধরব পাড়ি যায় যদি যাক প্রাণ
আনন্দেরি সাগর থেকে এসেছি আজ বান।

কে ডাকে রে পিছন হতে,
কে করে রে মানা,
ভয়ের কথা কে বলে আজ ভয় আছে সব জানা
আনন্দেরি সাগর থেকে এসেছি আজ বান।

কোন শাপে কোন গ্রহের দোষে
সুখের ডাঙায় থাকব বসে
পালের রশি ধরব কষি চলব গেয়ে গান
আনন্দেরি সাগর থেকে এসেছি আজ বান।

आनंद सिन्धुमें उठा है तूफान ले खुशियाँ अपार
सब पतवार पकड़ कर खेते जाओ नैया करो पार।

बोझा चाहे कितना भारी हो
दुःख की नदी मन पर तारी हो
खेल लहरों पर कर लेंगे पार
मोह छोड़ प्राणों का इस बार
आनंद सिन्धु में उठा है तूफान ले खुशियाँ अपार।

पीछे से कौन रहा पुकारता
भय को कौन है आज नकारता
भय कथा कौन बोले बार बार
भय व्यापित है यहाँ जाने संसार
आनंद सिन्धु में उठा है तूफान ले खुशियाँ अपार।

कौन सा यह शापित ग्रह दोष है

सुख से बैठुं किनारे न होश है
पकड़ पाल की रस्सी जार जार
गीत गाता चल तू बारम्बार
आनंद सिन्धु में उठा है तूफान ले खुशियाँ अपार।
आनंद सिन्धु में झंझा जोरदार

14. तोमर सोनार थालाय...

तोमर सोनार थालाय साजाव आज
दुखेर अश्रुधार।
जननी गो, गांथव तोमर
गलार मुक्ताहार।

चन्द्र सूर्य पाएर काछे
माला हये जडिये आछे,
तोमार वुके शोभा पावे आमार
दुखेर अलंकार!

धन धान्य तोमारि धन,
कि करवे ता कओ!
दिते चाओ टी दिओ आमाय
निते चाओ त लओ!

दुःख आमार घरेर जिनिष
खाँटी रतन तुई त चिनिस
तोर प्रसाद दिए तारे किनिस
ए मोर अहंकार।

माँ स्वर्ण थाल तेरा सजाऊं बारम्बार

सजा रखे मैंने इसमें दुख के अश्रुधार
माँ गुंथू तेरे लिए सच्चे मोती के हार
माँ स्वर्ण थाल तेरा सजाऊं बारम्बार।

चन्द्र-सूर्य जगमग बेमेल जड़े इस माला
परन्तु शोभा देगा तेरे गले यह विशाला
मेरे असहनीय दुखों का सौम्य अलंकार
माँ स्वर्ण थाल तेरा सजाऊं बारम्बार।

ये धन धान्य सब तुम्हारे ही दिए हुए
नहीं हमारे लिए इनका कोई प्रयोजन
ले लो या दे दो नहीं ये रहे पुरुष्कार
माँ स्वर्ण थाल तेरा सजाऊं बारम्बार।

दुःख तो मेरे घर के बन गए आभूषण
पहचान लो तुम ये ही हैं सच्चे रतनगण
दे निज प्रसाद माँ हर लो मेरे अहंकार
माँ स्वर्ण थाल तेरा सजाऊं बारम्बार।

15. जोदी तोर डाक शुने...

जोदी तोर डाक शुने केयू ना एशे एकला चोलो रे

जोदी तोर डाक शुने केयू ना एशे एकला चोलो रे
एकला चोलो एकला चोलो एकला चोलो एकला चोलो रे।

जोदी तोर डाक शुने केयू ना एशे एकला चोलो रे
जोदी तोर डाक शुने केयू ना एशे एकला चोलो रे

जोदी केयू कोथा ना कोए, ओरे ओरे ओ ओभागा,
केयू कोथाना कोई
जोदी शोबाय थाके मुख फिराई शोबाय कोरे भोये
तोबे पोरान खुले
ओ तोई मुख फूटे तोर मोनेर कोथा एकला बोलो रे
जोदी तोर डाक शुने केयू ना एशे एकला चोलो रे

जोदी शोबाय फिरे जाय,ओरे ओरे ओ ओभागा शोबाय फिरे जाय
जोदी गोहोन पोथे जाबार काले केयू फिरे ना चाए,
जोदी गोहोन पोथे जाबार काले केयू फिरे ना चाए,
तोबे पोथेर काटा
ओ तुई रोक्तो मोखा चोरोन तोले एकला डोलो रे
जोदी तोर डाक शुने केयू ना एशे एकला चोलो रे

जोदी आलो ना धोरे, ओरे ओरे ओ ओभागा
जो दी झोर बादोले आधार राते दुआर दी घोरे
तोबे बोजरानॉले
आपोन बुकेर पाजोर जलिये निये एकला जोलों रे
जोदी तोर डाक शुने केयू ना एशे एकला चोलो रे।

तेरी पुकार सुन कर भी जब
भूल जाएं कोई न आए
ओ अभागे क्यों अवसाद में
तू क्यूं तब मन को घबराए
अंतर्मन को न कर तू विकल अकेला चल तू अकेला चल
तू अकेला चल अकेला चल अकेला चल रे अकेला चल
सुने न कोई बात तुम्हारी
बुला बुला जुबां भी हारी
तेरी पुकार को झूठलाये
आवाज पर कोई न आए
होना मत कदापि तू विव्हल अकेला चल रे अकेला चल
तू अकेला चल अकेला चल अकेला चल रे अकेला चल
जब करता न कोई बात हो
अभागे रूठे जज्बात हो
मुख मोड़ सारे चले दे डर
मुक्त कंठ अपनी बातें कर
मुक्त कंठ बातें कर हर पल अकेला चल तू अकेला चल
तू अकेला चल अकेला चल अकेला चल रे अकेला चल
लौट सभी तुझे छोड़ जाएं
रे अभागे फिर न वे आएं
है गहन रात्रि तू गौर न कर
शूल बिछे लहू भरे पथ पर
लिए लोहित चरण तू संभल अकेला चल तू अकेला चल
तू अकेला चल अकेला चल अकेला चल रे अकेला चल
आलोक भी न हो जीवन मे
अभागे दिया न जले मन मे
बदरी भरी रात अंधियारी
बंद द्वार से कर तैयारी
बज्र शिखा से अस्थि जला चल अकेला चल तू अकेला चल
हृदय पंजर जला तू भी जल अकेला चल रे अकेला चल
तू अकेला चल अकेला चल अकेला चल रे अकेला चल

16. आमरा वन्धेछि काशेर...

आमरा वन्धेछि काशेर गुच्छ, आमरा गेंथेछी शेफाली माला
नवीन धानेर मंजरी दिए साजिए एनेछि डाला।
एसा गो शारद्लक्ष्मी, तोमार

शुभ्र मेघेर रथे, एस निर्मल नील पथे
एस धौत श्यामल आलो-झलमल
वन गिरी पर्वते, एस मुकुटे प्रिय श्वेत शतदल
शीतल शिशिर ढाला।

झारा मालतीर फुले आसन बिछानो निभृत कुंजे
भरा गंगार कुले फिरछि मराल डाना पातिवारे
तोमार चरण मूले।

गुन्जरतान तुलियो तोमार सोनार वीणार तारे
मदु मधु झंकारें हासिढाला सूर गलिया पडिवे
क्निक अश्रुधारे।

रहिया रहिया ये परशमणि झलके अलककोने
पलकेर तरे सकरुण करे
बुलाये बुलाये मने सोना हए यावे सकल भावना,
अंधार हइवे आला।

श्वेत पुष्प के गुच्छ बाँध कर, गूँथ हरसिंगार की माला
नूतन धान की बालियाँ ले, सजाया पूजने का डाला
तेरे लिए माँ लक्ष्मी शारदे
तू विघ्न सारे मेरे तार दे।

निर्मल शुभ्र मेघ के रथ से, पर्वत नील पथ पर अग्रसर
शुभ्र हिमगिरी पहन मुकुट कमल, वसंत मालती पुष्प सा झर
आसन बन बिछे निर्जन कुञ्ज, गंगा-तट नीर अम्बार दे
हंस घूम पंख बिछा निसार दे
तेरे लिए माँ लक्ष्मी शारदे।

गूंज गान हम करें तुम्हारा, स्वर्ण वीणा के सुन्दर तार
मधुर मादक इसकी झंकार, मिट जाएगी ये अश्रुधार
हर्ष गान से दूर हो क्षणिक दुःख, तू सुख अपरम्पार दे
झिलमिल पारसमणि की झलकार दे
तेरे लिए माँ लक्ष्मी शारदे।

करूणा भरे पलकों के नीचे
बुलाये बारम्बार मन भींचे
स्वर्ण भरे उजास भाव सार दे
ला रौशनी अंधियार मार दे
तेरे लिए माँ लक्ष्मी शारदे।

17. जननि, तोमार करुण चरणखानि

जननि, तोमार करुण चरणखानि
हेरिनु आजि ए अरुण-किरण रूपे।
जननी, तोमार मरणहरण वाणी
नीरव गगने भरि उठे चुपे चुपे।

तोमारे नमि हे सकल भुवन माझे,
तोमारे नमि हे सकल जीवन काजेः
तनु मन धन करि निवेदन आजि
भक्ति पावन तोमार पूजार धूपे।

जननी, तोमार, करुण चरण खानि
हेरेनु आजि हे अरुण-किरण रूपे।

माँ तेरे सुन्दर करुण कमल चरणों को
पड़ते देखा उनपर प्रभात किरणों को।
तेरी जीवन दायी वाणी फैल रही
नीरव नभ में चुपके चुपके खेल रही।

ऐ निखिल सृष्टि तुझको वंदन करता हूँ
पूर्ण जीवन कर्म तुझे नमन करता हूँ
तन मन धन तुझ पर न्योछावर करता हूँ
भक्ति पावन पूजा यह हृदय धरता हूँ।

माँ तेरे सुन्दर करुण कमल चरणों को
पड़ते देखा उनपर प्रभात किरणों को।
तेरी जीवन दायी वाणी फैल रही
नीरव नभ में चुपके चुपके खेल रही।

18. जगत जुड़े उदार सुरे...

जगत जुड़े उदार सुरे आनंदगान बाजे,
से गान कवे गभीर रवे बाजिवे हिया-माझे।

बातास जल आकाश आलो
सवारे कवे वासिव भालो,
हृदय सभा जुड़िया तारा वसिवे नाना साजे।

नयन दूटि मेलिले कवे परान हवे खुशी,
ये पथ दिया चलिया याव सवारे याव तुषि।

रयेछ तुमि, ए कथा कवे
जीवन माझे सहज हवे,
आपनि कवे तोमारि नाम ध्वनिवे सब काजे।

गीत आनंद का कब पुनः सजेगा।

समस्त जग में प्रवण सुर ये सज गए
सब जगह गीत आनंद के बज गए
गहरा गान ऐसा कब मन बजेगा
गीत आनन्द का कब पुनः सजेगा।

अंतस की यह महफिल यहाँ जमेगी
तारों की कई रूप सभा सजेगी।
पवन गगन जल ज्योति प्रकाश रहेगा
सज के धज के मन के मध्य बसेगा

गीत आनंद का कब पुनः सजेगा।

नयन बंद जब भी हो प्राण मुदित हों
जाऊं जिस डगर संतुष्ट सब मीत हों
ऐसी कथा कुछ हो जीवन सरल हो
नाम तेरा लूँ कर्मों की पहल हो।

मुदित प्राण में कब मन मीत बसेगा
गीत आनंद का कब पुनः सजेगा।

19. जेडिये गेछे सरू मोटा...

जेडिये गेछे सरू मोटा छुटो तारे
जीवन वीणा ठिक सुरे ताई बाजे ना रे।

एई बेसुरो जटिलताय
परान आमार मरे व्यथाय
हटात आमार गान थेमे याय वारे वारे।
जीवन वीणा ठिक सुरे आर बाजे ना रे।

एई वेदना बईते आमि पारि ना ये,
तोमार सभार पथे एसे मरि लाजे।

तोमार यारा गुणी आछे
बसते नारि तादेर काछे,
दाँड़िड़े थाकि सवार पाछे य बहिरे द्वारे।
जीवन वीणा ठिक सुरे आर बाजे ना रे।

उलझ गए मोटे पतले सब, टूट गए हैं दोनों तार
ठीक सुर में बजती नहीं अब, जीवन वीणा की झंकार।

व्याकुल हैं देख प्राण मेरे, इस बेसुर उलझन के द्वार
मेरी कविता के क्यों रुकते, साज अकस्मात बार बार
वेदना गहन बढती जाती, पाता मैं ना कोई पार
ठीक सुर में बजती नहीं अब, जीवन वीणा की झंकार।

तेरी महफिल में जब जाता, लाज मुझे देती है मार
बैठ न पाऊं उनकी संगत, बहुत गुणी हैं तेरे यार
रुक जाता हूँ सबसे पीछे, ठिठक ठिठक उनके द्वार
ठीक सुर में बजती नहीं अब, जीवन वीणा की झंकार।

उलझ गए मोटे पतले सब, टूट गए हैं दोनों तार
ठीक सुर में बजती नहीं अब, जीवन वीणा की झंकार।

20. जीवन यखन शुकाये...

जीवन यखन शुकाये याय करुना धाराय एसो।
सकल माधुरी लुकाये याय गीत सुधार से एसो।

कर्म यखन प्रबल-आकार गरजि उठिया ढाके चरि धार
हृदयप्रान्ते हे नीरव नाथ, शांत चरणे एसो।

आपनारे यवे करिया कृपण कोणे पड़े थाके दीन हीन मन,
दुयार खुलिया हे उदार नाथ, राज समारोहे एसो।

वासना यखन विपुल धुलाय, अंध करिया अबोधे भुलाय
ओहे पवित्र, ओहे अनिद्र, रुद्र आलोके एसो।

जीवन जब जब शुष्क हो जाय
करुण जलधार बन जाना तुम
जब सब माधुरी रस खो जाय
गीत सुधा के बरसाना तुम।

जीवन जब जब शुष्क हो जाय
करुण जलधार बन जाना तुम।

जब कर्म प्रबल होकर बरसे
चारों दिशा धार ढक गरजे
नीरव नाथ तब हृदय प्रदेश
शांत चरण लेकर आना तुम।

जीवन जब जब शुष्क हो जाय
करुण जलधार बन जाना तुम।

कृपण हृदय चाह तेरी लिए
दीन हीन थका सा ये जिए
उदार नाथ खोल द्वार किये
शाही उत्सव में आना तुम।

जीवन जब जब शुष्क हो जाय
करुण जलधार बन जाना तुम।

वासना का घना अन्धकार
जब भी अंधा अबोध कर दे
हे पवित्र अनिंद्र तम हरदे
प्रचंड प्रकाश ले आना तुम।

जीवन जब जब शुष्क हो जाय
करुण जलधार बन जाना तुम।

21. तोरा शुनिस नि कि...

तोरा शुनिस नि कि शुनिस नि तार पाएर ध्वनि
ओई ये आसे, आसे, आसे।
युगे युगे पले पले दिन रजनी से ये आसे, आसे, आसे।

गेयेछि गान यखन यत आपण मने ख्यापार मतो
सकल सुरे वेजेछे तार आगमनी से ये आसे आसे आसे।

कत कालेर फागुन दिने वनेर पथे से ये आसे आसे आसे।
कत श्रावण अन्धकारे मेघेर रथे से ये आसे आसे आसे।
दुखेर परे परम दुखे तारि चरण वाजे वुके,
सूखे कखन वुलिये से देय
परसमणि से ये आसे आसे आसे।

तुमने सुनी कि न सुनी उसकी पदचाप
वह आ रहा आ रहा आ रहा चुपचाप।
युग युग में पल पल में दिन रात आलाप
वह आ रहा आ रहा आ रहा चुपचाप।

गीत यहाँ गाता मन के पागल पन में
सारे सुर में सारे तारों में तन में
स्वागत के गीत वह सुनाता कर मिलाप
वह आ रहा आ रहा आ रहा चुपचाप।

कितने फागुन में कितने वनों में थाप
वह आ रहा आ रहा आ रहा चुपचाप।
सावन के काले मेघों की तिमिर छाप
वह आ रहा आ रहा आ रहा चुपचाप।

जब दुःख घनीभूत हो उठता उत्ताप
तेरे चरणों में गिर करे पश्चाताप
चुम्बन कर स्पर्श मणी का दे सुख प्रताप
वह आ रहा आ रहा आ रहा चुपचाप।

22. सुन्दर, तुमि एसेछिले...

सुन्दर, तुमि एसेछिले आज प्राते
अरुण-वरुण पारिजात लए हाते।
निद्रित पुरी, पथिक छिल ना पथे,
एका चलि गेले तोमार सोनार रथे
वारेक थामिया मोर वातायनपाने
चेयेछिले तव करुण नयनपाते
सुन्दर, तुमि एसेछिले आज प्राते।

स्वप्न आमार भरेछिल कोन गन्धे
घरेर आंधार कंपेछिल की आनंदे,
धुलाय लुटानो नीरव आमार वीणा
बेजे उठेछिल अनाहत की आघाते।
कतवार आमि भेवेछिनु उठि-उठि
आलस त्यजिया पथे बाहिराई छुटि
उठिनु यखन तखन गियेछ चले-
देखा बुझी आर हल ना तोमार साथे।
सुन्दर, तुमि एसेछिले आज प्राते।

नाथ सुन्दर आये थे आज प्रभात में
अरुण वरुण औ पारिजात लिए हाथ में।

सोया नगर था कोई पथिक न था पथ पर
चले गए तुम अकेले बैठ स्वर्ण रथ पर
मेरी खिड़की पर देखा मुझको रुककर
एक क्षण अपने करुण नयनों से तत्पर।

नाथ सुन्दर आये थे आज प्रभात में
अरुण वरुण औ पारिजात लिए हाथ में।

सपन सुनहरे भरे अनजानी सुरभि से
घर का तिमिर कांपा अनजानी खुशी से
धूल पड़ी मेरी नीरव वीणा नात में
रुक रुक कर बजती अज्ञात आघात में।

नाथ सुन्दर आये थे आज प्रभात में
अरुण वरुण औ पारिजात लिए हाथ में।

कितनी प्रकार सोचा उठकर बार बार
जाऊं आलस छोड़ बाहर पथ पर पार
जागा जब तक तुम चले गए कहीं नाथ
देखा समझा अब और नहीं रहा साथ।

नाथ सुन्दर आये थे आज प्रभात में
अरुण वरुण औ पारिजात लिए हाथ में।

23. यतवार आलो ज्वालाते...

यतवार आलो ज्वालाते चाइ निवे याय वारे वारे।
आमार जीवने तोमार आसन गभीर अन्धकारे।

ये लताटि आछे शुकायेछे मूल
कुंडि धरे शुधु, नाहि फोटे फूल
आमार जीवने तव सेवा ताई वेदनार उपहारे।

पूजा गौरव पुण्यविभव किछु नाहि, नाहि लेश,
ए तव पुजारि परिया एसेछे लज्जार दीन वेश।

उत्सव तार आसे नाइ केह,
वाजे नाइ वाँशि, सजे नाइ गह-
कांदिया तोमाय एनेछि डाकिया भाडा मंदिर द्वारे।

जब जब दीप जलाना चाहूँ, बुझता जाए बार बार
मेरे जीवन में फैला ये, कैसा सघन अंधियार।

सुखा हुआ मूल जिस लता का, वहाँ कली खिले न फूल
मेरे जीवन में तब सेवा, वेदना उपहार शूल
गौरव पूजा पुण्य शक्ति का, कोई ना किंचित लेश
तेरा दीन पुजारी आता, धारण कर लज्जा वेश।

उत्सव में ना आता कोई, ना बंशी की धुन तार
न कोई सजावट अब कोई, ये रो रो करे पुकार
अपने टूटे इस मंदिर में, मेरी करुणित चीत्कार
मेरे जीवन में फैला ये, कैसा सघन अंधियार।

24. विश्व यखन निद्रागमन...

विश्व यखन निद्रागमन, गगन अन्धकारय
के देय आमार वीणार तारे एमन झंकार।

नयने घूम निल केड़े, उठे वसि शयन छेड़े
मेले आँखी चेये थाकि, पाई ने देखा तार।

गुंजरिया गुंजरिया प्राण उठिल पुरे,
जानि ने कोन विपुल वाणी बाजे व्याकुल सुरे।

कोन वेदनाय बुझि ना रे हृदय भरा अश्रुभारे,
परिये दिते चाई काहारे आपन कंठ हार।

जब गगन छाया हो तिमिर,
काले बादल छाये घिर।
जब बेखौफ निंद्रा में सोया था समस्त संसार
कौन है जिसने मेरी वीणा को दी ऐसी झंकार

चुपके से नींद चुराकर
बिस्तर से मुझे उठाकर
आँखें मलता देख रहा कोई नहीं दिखा आरपार
कौन है जिसने मेरी वीणा को दी ऐसी झंकार।

गूंज गूंज कर स्वर अनहद
प्राणों में भरें ये सुखद
जाने ना कैसी विपुल वाणी व्याकुल सुर में बज हार
कौन है जिसने मेरी वीणा को दी ऐसी झंकार।

न जाने किस वेदना से
भर मन अश्रु चेतना से
किसे पहनाना चाहें मिथ्या जगत अपना कंठहार
कौन है जिसने मेरी वीणा को दी ऐसी झंकार।

25. छाडिस ने धरे थाक...

छाडिस ने धरे थाक एंटे, ओरे हवे तोर जय।
अन्धकार याय वुझी केटे, ओरे आर नेइ भय।

ओई देख पुर्वाशार भाले, निविड़ वनेर अन्तराले
शुक तारा हयेछे उदय, ओरे आर नेइ भय।

एरा ये केवल निशाचर अविश्वास आपनार पर,
निराश्वास, आलस्य, संशय, एरा प्रभातेर नय।

छूटे आय, आय रे वहिरे, चेये देख देख उर्ध्वशिरे
आकाश हतेछे ज्योतिर्मय ओरे आर नेइ भय।

छोड़ मत छोड़ मत धैर्य रख कर चला चल
अवश्य तिमिर ढलेगा चल संभल संभल
मार्ग कठिन है पर मिलेगी तुझे ही जय
अब और नहीं है भय और नहीं है भय।

पूरब के जंगलों के अंधकार बीच
सुन्दर कितना है यह देख आंखें मीच
मोहक प्रभात तारे का हुआ है उदय
अब और नहीं है भय और नहीं है भय।

जितने भी हैं ये सारे केवल निशाचर
मिल गहराते अविश्वास अपने ऊपर
इस सुबह न हों निराशा आलस्य संशय
अब और नहीं है भय और नहीं है भय।

छूट इस घुटन से दौड़ कर बाहर निकल
चाह कर देख देख मस्तक का उर्ध्व तल
अवनी अम्बर सब हैं प्रकाशित ज्योतिर्मय
अब और नहीं है भय और नहीं है भय।

26. भेवेछिन मने या हवार...

भेवेछिन मने या हवार तारि शेषे
यात्रा आमार बुझि थेमे गेछे एसे।
नाइ बुझि पथ, नाइ बुझि आर काज
पाथेय या छिल फुरायेछे बुझि आज,
येते हवे सरे नीरव अन्तराले
जीर्ण जीवने छिन्न मलिन वेशे।

की निरखि आजि, ए की अफुरान लीला,
ए की नवीनता वहे अन्तः शीला।
पुरातन भाषा मरे एल यवे मुखे,
नवगान हये गुमरि उठिल वुके,
पुरातन पथ शेष हये गेल येथा
सेथाय आमारे अनिले नूतन देशे।

कार्य पूर्ण हुआ या शेष है, मन में यही सोच व्याप्त
परन्तु लग रहा मुझे अब है, यात्रा हो चुकी समाप्त।

न राह समझ पाया तुम्हारी, न समझ पाया हूँ काम
छूट गयी गाडी तो मेरी, समझा न आज अंजाम
वीराने में जाना होगा, ले जीर्ण जीवन प्रयाप्त
मैला वेश मेरा रह गया, यात्रा हो चुकी समाप्त।

निरख रहा प्रभु तेरी लीला, है अद्भुत अपरम्पार
नवीनता बहती अन्तःस्थल, मुख में यह भाषा मार
पुरातन भाषा नव गीत हैं, गूंजती हृदयसुर आप्त
पहुंचाकर नूतन देश मुझे, राह विगत हुई समाप्त।

कार्य पूर्ण हुआ या शेष है, मन में यही सोच व्याप्त
परन्तु लग रहा मुझे अब है, यात्रा हो चुकी समाप्त।

27. मधोबी हठात कोथा होते...

मधोबी हठात कोथा होते एलो फागुन दिनेर स्रोते
एसे हेसेई बाले, जाई जाई जाई
पतारा घिरे डाले डाले तारे काने काने बाले
ना ना ना, नाचे ताई ताई ताई

आकासेरो तारा बाले तारे, तुमि एसो गगोन पारे
तोमया चाइ चाइ चाइ
पतारा घिरे डाले डाले तारे काने काने बाले
ना ना ना, नाचे ताई ताई ताई

बातास दोखिनो होते आसे, फेरे तारी पासे पासे बाले
आया आया आया
बाले नील अतोलर कुले सुदुरो अस्ताचलेर मुले
बाले जाई जाई जाई

बोले पुर्नोशिशिर राती क्रोमे हबे मोलिनो भाटी
सोमाय नाइ नाइ नाइ
पतारा घिरे डाले डाले तारे काने काने बाले
ना ना ना, नाचे ताई ताई ताई

आई अचानक कहाँ से हेमा पुष्पलताएँ हैं
फागुन के दिनों में ये सुरभि कैसे फैलाये हैं
जाना है हमें अभी आते ही ये बतलाएं हैं
नूतन पल्लव घोर कानों से कह रहे
ना, ना, ना, नाच ता ता थैया कर रहे।

आसमान के तारे बोले आओ गगन के पार
ऐ तारे हम चाहते तुम्हे करते अनुपम प्यार
आना होगा तुम्हे आना ही होगा बारम्बार
नूतन पल्लव घोर कानों से कह रहे
ना, ना, ना, नाच ता ता थैया कर रहे।

दक्षिण से आती हवाएं, आकर कहती हैं पास
आना चले आना बीते चले समय का आभास
क्षितिज में दूर अस्ताचल में ये पूनम का प्रकाश
घटेगा यह घटना क्रम समय नहीं आने की आस
नूतन पल्लव घोर कानों से कह रहे
ना, ना, ना, नाच ता ता थैया कर रहे।

('गीत पंचशती' में 'प्रकृति' के अन्तर्गत)

28. दिवस यदि सांग हल...

दिवस यदि सांग हल, ना यदि गाहे पाखि,
क्लांत वायु ना यदि आर चले दृ
एवार तवे गभीर करे फेलो गो मोरे ढाकि
अति निविड़ घन तिमिरतले
स्वप्न दिए गोपन धीरे धीरे
येमेन करे ढेकेछ धरणीरे,
येमन करे ढेकेछे तुमि मुडिया-पड़ा- आँखी
ढेकेछे तुमि रातेर शतदले।

पाथेय यार फुराए आसे पथेर माझखाने
क्षतिर रेखा उठेछे यार फुटे,
वसनभूषा मलिन हल धुलाय अपमाने
शकति यार पड़ते चाय टूटे -
ढाकिया दिक ताहार क्षत व्यथा
करुणाघन गभीर गोपनता
घुचाय लाज फुटाओ तारे नवीन उषापाने
जुडाये तारे आंधार सुधा जले।

हे जगस्वामी!

दिवस का अवसान हो जाये
खग बन्द कर गान सो जाएं
थम गयी हों शीतल हवाएं
तब प्रभु दुकूल अंधकार का, डाल देना इस देह पर
डाली थी ज्यूँ चादर तूने, निंद्रा की हमें स्नेह कर॥

जब शतदल की पंखुड़ियों को
बन्द किया लगा अँगुलियों को
आदर से हटा दूरियों को
समाप्त हो चुकी सामग्री, पथिक तेरी नेह धार
डाली थी ज्यूँ चादर तूने, निंद्रा की हमें स्नेह कर॥

यात्रा से ही पहले देखो
वस्त्र अपने फट चले देखो
शक्तिहीन पथिक पले देखो
लाज दीनता दूर करो प्रभु, वैसे ही ज्यूँ संदेह तज
तूने अनेक पुष्प खिलाये, रात्री की छांव में सहज॥

एक नवजीवन दान दे प्रभु, लेकर मुझे निज गेह पर
डाली थी ज्यूँ चादर तूने, निंद्रा की हमें स्नेह कर
तब प्रभु दुकूल अंधकार का, डाल देना इस देह पर॥

29. कोथाय आलो, कोथाय आलो

कोथाय आलो, कोथाय आलो।
विरहानले ज्वालो रे तारे ज्वालो।
रयेछे दीप ना आछे शिखा
एई कि भाले छिल रे लिखा
इहार चेये मरण से ये भालो।
विरहानले प्रदीपखानि ज्वालो।
वेदनादूती गाहिछे ओरे प्राण,
तोमार लागि जागेन भगवान
निशीथे घन अन्धकारे
डाकेन तोरे प्रेमाभिसारे
दुःख दिए राखेन तोर मान
तोमार लागि जागेन भगवान
गगनतल गियेछे मेघे भरि
बादल जल पडिछे झरि झरि
ए घोर राते किसेर लागि
परान मम सहसा जागि
एमन केन करिछे मरि मरि
बादल जल पडिछे झरि झरिध
विजुलि शुधु क्षणिक आभा हाने
निविड़तर तिमिर चोखे आने
जानि ना कोथा अनेक दूरे
वाजिल प्राण गभीर सुरे
सकल गान टानिछे पथ पाने
निविड़तर तिमिर चोखे आने।
कोथाय आलो, कोथाय आलो।
विरहानले ज्वालो रे तारे ज्वालो।
डाकिछे मेघ, हांकिछे हा ओया
समय गेले हवे ना या ओया
निविड़ निशा निकष घन कालो
परान दिए प्रेमेर दीप ज्वालो।

कहाँ है उजाला कहाँ है उजाला
विरहअग्नि से यहाँ जला लो ज्वाला।
न रहे दीप न रहे शिखा
माथे पर क्या यही लिखा
इस मरने से यही भला
विरहानल से दीप जला।।

वेदना पुकारती ओ मेरे प्राण
तुम्हारे लिए ही जगे हैं भगवान
निशिके गहन अँधकार में
पुकार प्रेम अभिसार में
दुख दे, रखा तेरा मान
तेरे लिए जगे भगवान।।

बादलों से नभ पर छाई घटाएं
बादल झर झर जल बरसायें
घोर रात्री कैसी लगे
प्राण मेरे सहसा जगे
घात ऐसा क्यों रहे कर
बरसे बादल जल झर झर।।

चपला मात्र क्षणिक प्रकाश भरती है
पुनः आँखों में तिमिर उडे़लती है
पता नहीं कहाँ दूर में
गा कोई गहरे सुर में
मन को पथ पर है लाता
फिर अन्धकार छा जाता।।

कहाँ है उजाला कहाँ है उजाला
विरहअग्नि से यहाँ जला लो ज्वाला।
पुकारे मेघ और पवन
काटे न कटे कोई क्षण
गहन रात काली बदली
प्राण दे प्रेम शिखा जली।।

30. आज वरषार रूप हेरि...

आज वरषार रूप हेरि मानवेर माझे
चलेछे गरजि, चलेछे निविड़ साजे।
हृदये ताहार नाचिया उठिछे भीमा,
धायिते धायिते लोप करे चले सीमा,
कोन ताडनाय मेघेर सहित मेघे,
वक्षे वक्षे मिलिया वज्र बाजे।
वरषार रूप हेरि मानवेर माझे।

पूंजे पूंजे दूर सुदूरेर पाने
डाले डाले चले, केन चले नाहि जाने।
जाने ना किछुइ कोन महाद्रीतले
गभीर श्रावणेगलिया पडिवे जले
नाही जाने तार घनघोर समारोहे
कोन भीषण जीवन मरण राजे
वरषार रूप हेरि मानवेर माझे।

ईशान कोणेते ओई ये झडेर वाणी
गुरु गुरु रवे की करिछे कनाकानी।
दिगंतराले कोन भवितव्यता
स्तब्ध तिमिरे वहे भाषा हीन व्यथा,
कालो कल्पना निविड़ छायार तले
घनाये उठिछे कोन आसन्न काजे
वरषार रूप हेरि मानवेर माझे।

देखो मनुज में आज रूप वर्षा का दिखा
भरे कल्मष, गरज गरज चले मेघ सरीखा।

हृदय में उसके अहम् भीम बना नाच रहा
सीमायें तोड़ दौड़ रहा मनुज यहाँ वहाँ
मेघों से मेघ टकरा गुंजायमान कहाँ
वक्ष वक्ष मिल चपला चमके अग्निशिखा
देखो मनुज में आज रूप वर्षा का दिखा।

कौन चला दूर सुदूर स्थान खोज खोज कर
डाल डाल चला न जाने क्यूँ चला बोझ धर
कुछ न जानता वह चला कौन से पर्वत पर
सावन में बरसेगा बादल किस विधि झर झर।

घनघोर समारोह भीषण जीवन मरण छिपा
देखो मनुज में आज रूप वर्षा का दिखा।

ईशान कोण से आ रही हैं ध्वनि तूफानीं
बड़े बड़े स्वर क्यों करते ये आना कानी
क्षितिज के अंतराल में कोई नहीं आनी
स्तब्ध तिमिर की बहे भाषा विहीन कहानी।

काली कल्पना गहन छाया नीचे सींचा
घटायें मेघ की क्या करें अनूठा तीखा
देखो मनुज में आज रूप वर्षा का दिखा

31. आमार खेला यखन छिल...

आमार खेला यखन छिल तोमार सने, तखन के तुमि ता के जानत
तखन छिल ना भय छिल ना लाज मने, जीवन वहे येत अशांत।

तुमि भोरेर वेला डाक दियेछे कत, येन आमार आपन सखार मतो,
हेसे तोमार साथे फिरेछिलेम छूटे, सेदिन कत ना वन वनांत।

ओगो सेदिन तुमि गायिते ये सव् गान, कोनो अर्थ ताहार के जानत
शुधु संगे तारि गायित आमार प्राण, सदा नाचत हृदयअशांत।

हठात खेलार शेषे आज की देखि छवि, स्तब्ध आकाश नीरव शशि रवि
तोमार चरण पाने नयन करि नत, भुवन दांडिये आछे एकांत।।

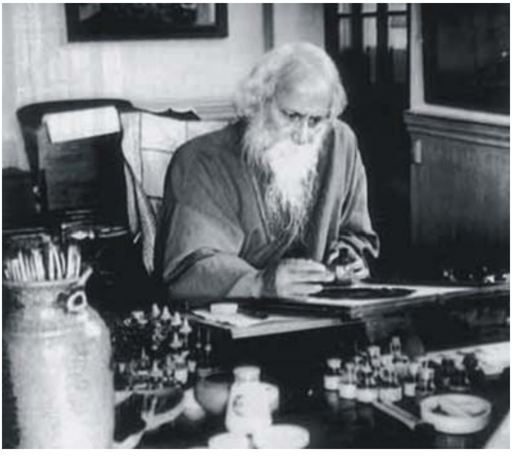

खेला करते थे हम तब भी तुम्हारे संग
कौन जानता था तब तेरे ऐसे प्रसंग
न कोई भय था, न कोई लाज थी हृदय में समाई हुई
बस जीवन में अशांति थी छाई हुई अशांति छाई हुई।

सुबह सबेरे तुम मुझे पुकारा करते थे
ज्यूँ मेरे अपने सखा पुकारा करते थे
साथ तुम्हारे घूमते फिरते रहते उन्मुक्त से हम तुम
सारे दिन जंगल मंगल मगर फिर भी अशांति छाई हुई।

ओ सुनो उस दिन तुमने गाये थे सब गीत
अर्थ गीतों के न समझा सका कोई मीत
केवल तेरे संग गीत गाते थे मेरे ये प्राण सदा
नाचता हरदम हृदय अशांत इसलिए अशांति छाई हुई।

अचानक खेल हुआ खत्म देख आज की छवि
स्तब्ध था आकाश स्तब्ध थे ये शांत शशि रवि
तुम्हारे पावन चरणों पर कर नैनों को नत मैं खड़ा था
जग खड़ा था जहाँ एकांत इसीलिए अशांति छाई हुई।

32. ओई ये तरी दिल खुले

ओई ये तरी दिल खुले।
तोर बोझा के नेवे तुले।
सामने यखन यावि ओरे थाक ना पीछे पड़े
पिठे तारे बयिते गेली, एकला पड़े रइलि कुले।

घरेर बोझा टेने टेने।
पारेर घाटे राखली एने।
ताई ये तोरे वारे वारे फिरते हल गेलि भूले।

डाक रे आवार माझिरे डाक
बोझा तोमार याक भेसे याक
जीवनखानि उजाड़ करे, सँपे दे तार चरणमूले।

ओहो नाव तेरी खोल कर
कौन उठाये बोझा सर पर
यहाँ सामने हो जब तुम कोई न पीछे से पुकारे
वापस जाए भार लाने छूटे न अकेला किनारे।

घर का सारा बोझा खींच खींच
ला रखा इस पार सींच सींच
बार बार इस लिए ही पड़ा लौटना भूले बिसारे।
वापस जाए भार लाने छूटे न अकेला किनारे।

बुला अब फिर नाविक को बुला
बहने दे बोझ सारा ढुला
जीवन सारा उजाड़ के सौंप दो उनके पग पसारे
वापस जाए भार लाने छूटे न अकेला किनारे।

33. उड़िए ध्वजा अभ्रभेदी रथे

उड़िए ध्वजा अभ्रभेदी रथे
ओई ये तिनि, ओ इ ये वाहिर पथे
आय रे छूटे, टानते हवे रशी
घरेर कोणे रायिल कोथाय वसि
भिडेर मध्ये झाँपिये पड़े गिये
ठाँइ करे तुई ने रे कोनोमते॥

कोथाय की तोर आछे घरेर काज
से-स्व कथा भूलते हवे आज।
टान रे दिए सकल चित्तकाया
टान रे छेड़े तुच्छ प्राणेर माया
चल रे टेने आलोर अन्धकारे
नगर ग्रामे अरण्ये पर्वते।

ओई ये चाका घुरछे झनझनि,
वुकेर माझे शुनछे कि सेई ध्वनि।
रक्ते तोमार दुलछे ना कि प्राण
गायिछे ना मन मरण जयी गान
आकांक्षा तोर वन्यावेगेर मतो
छुटछे नाकि विपुल भविष्यते।

उड़े पताका नभ भेदी रथ पर
देख वहाँ देख बाहरी पथ पर।
छूट रही रे, अब तुम्हे ही रस्सी खींचनी है
बैठा घर के कोने में कहाँ अब सींचनी है
भीड़ बीच झट जा पड़ा यहाँ क्यों
निकलो घर के कोने से पथ पर।
उड़े पताका नभ भेदी रथ पर।

घर में तेरा क्या है काम सुनो
भूलना तुम्हे है सब बात सुनो
इस समस्त चित्त को यहाँ तू खींचो रे मनवा
खींच प्राण स्वयं के तू इधर सींचो रे मनवा
खींच आलोक को अंध की ओर
नगर ग्राम वन पर्वत सब तत्पर
उड़े पताका नभ भेदी रथ पर॥

झनझन कर के चक्का घूम रहा
छाती में मैं यह स्वर सुन रहा
रक्त तेरा उबले या फिर काँपें तेरे प्राण
गाता रहे तुम्हारा मन ये मृत्यु जय के गान
इच्छा प्रबल बढे बाढ़ वेग से
छूटे न, है भविष्य को अग्रसर
उड़े पताका नभ भेदी रथ पर॥

34. Where have I come...

गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने कुछ कवितायेँ अंग्रेजी में भी लिखी हैं भषा प्रवाह कम ज्यादा हो भले पर भाव उनमें किसी भी उनकी बंगला रचना से कम न थे, आज मातृदिवस पर उनकी एक बहु चर्चित रचना ″द बिगिनिंग्स″ का कव्यनुवादा संलग्न है:

"Where have I come from, where did you pick me up." the
baby asked its mother-
She answered, half crying, half laughing, and clasping the
baby to her breast-
"You were hidden in my heart as its desire, my darling.
You were in the dolls of my childhood's games; and when with
clay I made the image of my god every morning, I made the
unmade you then.
You were enshrined with our household deity, in his worship
I worshipped you.
In all my hopes and my loves, in my life, in the life of my
mother you have lived.
In the lap of the deathless Spirit who rules our home you have
been nursed for ages.
When in girlhood my heart was opening its petals, you hovered
as a fragrance about it.
Your tender softness bloomed in my youthful limbs, like a glow
in the sky before the sunrise.
Heaven's first darling, twain-born with the morning light, you
have floated down the stream of the world's life, and at last you
have stranded on my heart.
As I gaze on your face, mystery overwhelms me; you who belong
to all have become mine.
For fear of losing you I hold you tight to my breast.
What magic has snared the world's treasure in these slender
arms of mine ?"

कहाँ मिली मैं, कहाँ से मैं आई
पूछा शिशु ने बतला मेरी माई॥

कुछ रोती कुछ हंसती चिपका छाती से यूँ बोली
छिपी हुई थी उर में मेरे, सोयी इच्छा खोली
बचपन के खेलों में, थी प्यारी सी गुड़िया बनकर
माटी की उस मूर्ति में गढ़ती तुझे बेटी तत्पर
हर दिन यही करती थी बना बना मिट्टी में मिलाई
कहाँ मिली मैं, कहाँ से मैं आई
पूछा शिशु ने बतला मेरी माई॥

कुलदेवी की प्रतिमा में भी, तुमको ही पूजा है
मेरे और माँ के जीवन में न कोई दूजा है
सदा रही जो और रहेगी, अमर स्वामिनी घर की
उसी गृहात्मा की गोदी में, तुम्ही पली युग-युग सी
खिली खिली हृदयकली की, पंखुडियाँ जब खिल आई
कहाँ मिली मैं, कहाँ से मैं आई
पूछा शिशु ने बतला मेरी माई॥

मंद सुगंध बनी सौरभ-सी, तुम चँहु ओर फिरी थीं
सूर्योदय की छटा-सी, तब मृदुतालिए घिरी थी
यौवन वेला तरुणांगों में, कमिलिनी-सी जो फूली
स्वर्ग की प्रिय तू दीप्त, जगजीवन सरिता संग ढुली
तब जीवन नौका आकर, हृदयघाट पर रुक गाई
कहाँ मिली मैं, कहाँ से मैं आई
पूछा शिशु ने बतला मेरी माई॥

मुखकमल निहार तेरा, डूबती मैं रहस्योदधि में
निधि अमूल्य जगती की थी जो, हुई आज सन्नधि में
खोने के भय कारण, कसकर छाती के पास रखूँ
किस जादू से जग वैभव, बाँहों आया यही कहूँ
तू ईश्वर की अनुकम्पा किस विधि मुझमें समाई
कहाँ मिली मैं, कहाँ से मैं आई
पूछा शिशु ने बतला मेरी माई॥

35. एक टुकु छोंवा लागे...

एक टुकु छोंवा लागे, एक टुकु कौथा शूनि
ताई दिये मोने मोने, रोची मोमो फाल्गुनी

किछू पौलाशेर नेशा, किछू बा चाँपाये मेशा
ताई दिये शूरे शूरे, रौंगे-रौशे जाल बुनी

जे टूकू काछे ते आशे, खनिकेर फाँके फाँके
चोकितो मोनेर कोने, श्वौपनेर छोबि आँके

जे टुकु जाये रे दूरे, भाबना काँपाये शूरे
ताई निये जाये बैला, नूपूरेरो ताल गूनी

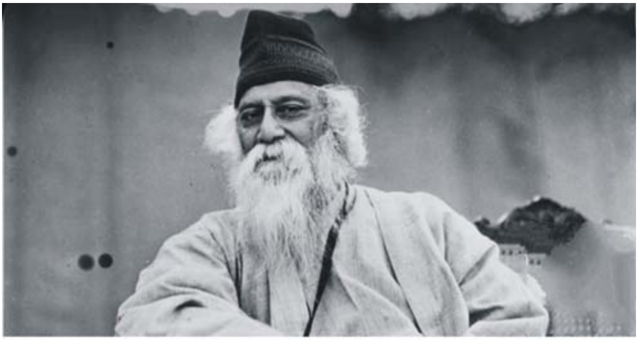

थोड़ी सी छुअन घनी
थोड़ी सी बात सुनी
उन ही से मन में मेरे, मैंने रची फाल्गुनी
थोड़ी सी.....

कुछ ढाक का नशा
कुछ चंपा गंध मिला
उन्हीं से सुर सजा कर, रंग औ' रस जाल बुनी
थोड़ी सी.....

कुछ देर पास आते
स्वप्न की छवि बनाते
क्षणों के बीच में से, मन चकित कोने चुनी
थोड़ी सी.....

जो कुछ दूर भी गए
भावना स्वर कँपाए
उन्हीं से दिन बिताये, नूपुर के ताल गुनी
थोड़ी सी छुअन लगी...

36. ओगो कांगाल...

ओगो कांगाल, आमारे कांगाल कोरेछे
आरो की तोमार चाई
आगू भिखारी, आमार भिखारी
चोलेछो की कातोर गान गाई
प्रतिदिन प्राते नबो नबो धोने
तुषिबो तोमरे साध चिलो मोने
भिखारी आमार भिखारी
हए पोलोके शोकोली शोपेछि चोरोने
आर तो किछु नाई।
आमी आमार बुकेर आचोल घेरिये
तोमरे पोरानु बाश
आमि आमार भुभोन शुन्नो कोरेछि
तोमार पुराते आश।
हेरो मोन प्राण मोन जौबोन नबो
कोर पुटटोले पोरे आछे तोबो।
भिखारी आमार भिखारी, हए आरो
जोदी चाओ मोर ए किछु दाओ
फिरे आमि दिबो ताई।

ओ भिखारी ओ रे, भिखारी क्यों बनाया मुझे भी
और भला चाहा तूने, चाहत में लाया मुझे भी

ओरे ओरे ऐ भिक्षुक, ओरे मेरे तुम भिक्षुक
कातर गीत सुना भैया, तेरे गीतों का इच्छुक
दूंगा तुम्हे नित्य धन नव, साध मन पल बुझे भी।

ओ भिखारी ओ रे, भिखारी क्यों बनाया मुझे भी
और भला चाहा तूने, चाहत में लाया मुझे भी

सौंपा सब कुछ एक पल में, और पास कुछ बचा नहीं।
तुझको पहनाए दुकूल, घेरों आँचल लिया नहीं
पूरी की आस तुम्हारी, जगत में छोड़ा कुछ नहीं
मन प्राण यौवन सभी तो, उसी मुट्ठी में झुके भी।

ओ भिखारी ओ रे, भिखारी क्यों बनाया मुझे भी
और भला चाहा तूने, चाहत में लाया मुझे भी

हाँ चाहो अगर और भी, कुछ तो दो मुझे और तुम
लौटा जिसे सकूँ उसको, ओ भिखारी तुमको गुमसुम
मेरी आशा के भिक्षुक, तुम्हीं सुलझे अनबुझे भी।

ओ भिखारी ओ रे, भिखारी क्यों बनाया मुझे भी
और भला चाहा तूने, चाहत में लाया मुझे भी

37. चाइ गो आमि तोमारे चाइ...

चाइ गो आमि तोमारे चाइ, तोमाय आमि चाइ-
एई कथाटि सदाई मने, वलते येन पाइ।

आर या किछु वासनाते घूरे वेड़ाई दिने राते
मिथ्या से दृसव मिथ्या ओगो तोमाय आमि चाइ।

रात्रि येमन लुकिये रखे आलोर प्राथानाई -
तेमनि गभीर मोहेर माझे तोमाय आमि चाई।

शान्तिरे झड़ यखन होने शांति तवु चाय से प्राणे,
तेमनि तोमाय आघात करि तवु तोमाय चाइ।।

चाहूँ तुमको मैं चाहूँ मैं तुमको चाहूँ
बात सदा यह मन में बलात् रखना चाहूँ
ये कुछ वासना ले फिरता दिन रात मारा
मिथ्या सब मिथ्या सच बस मैं तुमको चाहूँ।

ज्यूँ रात्रि में छिपी हुई प्रकाश की प्रार्थना
त्यूं ठीक गहन रहस्यों बीच तुमको चाहूँ
झंझा की शांति के बाद की शांति अब चाहूँ
तुझे दे आघात ऐसे ही तुमको चाहूँ।।

38. आमार ए प्रेम नय तो...

आमार ए प्रेम नय तो भीरु, नय तो हीनबल,
शुधु कि ए व्याकुल हए फेलवे अश्रुजल।
मंद मधुर सूखे शोभाय
प्रेम के केन घुमे डोवाय।
तोमार साथे जागते से चाय आनंदे पागल।

नाचो यखन भीषण साजे
तीव्र तालेर आघात वाजे
पालाय त्रासे पालाय लाजे
संदेह विव्हल ...
सेई प्रचंड मनोहरे
प्रेम येन मोर वरण करे,
क्षुद्र आशार स्वर्ग ताहार दिक् से रसातल।

प्रेम नहीं मेरा डरपोक, न इसमें कम है बल
फिर क्यूँ केवल होकर व्याकुल बरसते अश्रु जल।

मंद मधुर सुख शोभायमान
प्रेम को नींदसुला अनजान
चाहूँ तेरे साथ जागना हो आनन्द में पागल।

नाच यहाँ पर भीषण रूप धरे
है ताल से तीव्र आघात पड़े
डर से भागे, भागे लाज करे संदेह करे विह्वल।

यह ही है बात प्रचंड मनोहर
चला प्रेम मुझको यहीं वरण कर
स्वर्ग की क्षुद्र आशा लिए जाऊं मैं रसातल।।

39. आरो आघात सयिवे आमार

आरो आघात सयिवे आमार,
................सयिवे आमारो,
आरो कठिन सुरे जीवन तारे झंकारो द्य
ये राग जागाओ आमार प्राणे
वाजे नि ता चरम ताने
निठुर मुछर्नाय से गाने,
............मूर्ति सञ्चारो।

लागे ना गो केवल येन
कोमल करुणा,
मृदु सुरेर खेलाय ये प्राण
व्यर्थ कोरो ना।
ज्वले उठुक सकल हुताश,
गर्जि उठुक सकल वातास,
जागिये दिए सकल आकाश
पूर्णता विस्तारो।

और आघात सह लूँगा, सह लूँगा मैं मारो तुम
जीवन के तार और कठिन सुर से झंकारो तुम।

यह राग जगाओ मेरे प्राणों में
जो बजा न अब तक अंतिम तानों में
निष्ठुर मूर्छा लाये उन गानों में
मूरत उतारो तुम।
जीवन के तार और कठिन सुर से झंकारो तुम।

लगता नहीं केवल जैसे कोमल करुणा है यहाँ
मृदु सुर के खेलों में प्राण व्यर्थ कर न अब यहाँ।

जल उठी अब मेरी सारी हताशा
गरज रही अब सारी हवा वताशा
जाग रही समस्त अंबर की आशा
पूर्णता को विस्तारो तुम।
जीवन के तार और कठिन सुर से झंकारो तुम।

40. येथाय थाके सवार अधम...

येथाय थाके सवार अधम दीनेर हते दीन
सेयिखाने ये चरण तोमार राजे
सवार पीछे सवार नीचे,
स्व-हारादेर माझे।

यखन तोमाय प्रणाम करि आमि,
प्रणाम आमार कोनखाने याय थामि,
तोमार चरण येथाय नामे अपमानेर तले
सेथाय आमार प्रणाम नामे ना ये
सवार पिछे, सवार नीचे,
सव-हरादेर माझे।

अहंकार तो पाय ना नागाल येथाय तुमि फेर
रिक्त भूषण दीन दरिद्र साजे
सवार पिछे, सवार नीचे
सव-हारादेर माझे।

धने माने येथाय आछे भरि
सेथाय तोमार संग आशा करि
संगी हये आछ येथाय संगिहीनेर घरे
सेथाय आमार हृदयनामे ना ये
सवार पिछे, सवार नीचे,
सव-हारादेर माझे।।

सबसे अधम सबसे दरिद्र रहते है जहाँ
नाथ ये चरण तुम्हारे बसते हैं वहाँ।
सबके पीछे सबके नीचे, जिनका लुट चुका पूरा घर।

जब तुमको मैंने किया प्रणाम हे प्रभुवर
किसने रोक लिया मेरे नमन को ठहर
आपके पग तले ही मान अपमान पले
पहुँच न पाए वहाँ मेरे प्रणाम की प्रहर।
सबके पीछे.............

कहीं भी अहंकार तुम्हें न छू पाया है
भूषण हीन दीन हीन बन तू बेखबर
सबके पीछे.............

धनमान प्रतिष्ठा से आप भरा रहते
तभी तो आशा सब आपसे हैं करते
संगी साथी बन आते तुम संगी के घर
पहुँच न पाता मेरा हृदय वहां हो निडर।
सबके पीछे.............

41. दया दिए हवे गो...

दया दिए हवे गो मोर जीवन धुते----
नइले कि आर पारव तोमार चरण छूते।
तोमर दिते पूजार डालि
वेडिये पड़े सकल कालि,
परान आमार पारि न ताई पाये थूते।

एतदिन तो छिल ना मोर कोनो व्यथा,
सर्व अंगे माखा छिल मलिनता।
आज ओई शुभ्र कालेर तरे
व्याकुल हृदय कैंदे मरे
दियो ना गो , दियो ना आर धुलाय शुते।

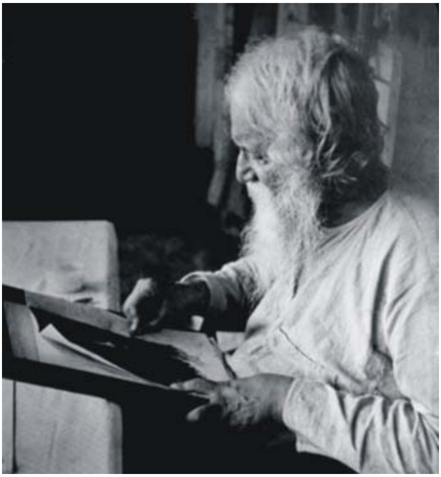

मेरा जीवन दया कर कर दो परिच्छालित
वरन छू न पाऊंगा चरण तेरे कदाचित
तेरे पूजा की डाली
होकर आई सब काली
मेरे प्राण कैसें थूकें तेरे चरणों पर।

आज तो रही न कोई मेरे मन में व्यथा
मिट चुकी अंगों में भरी सारी मलिनता
उसी शुभ्र काल में खोये
व्याकुल मन कैद में रोये
मत दो हाँ मत दो मुझे सोने रज कणों पर।
मेरे प्राण कैसें थूकें तेरे चरणों पर।

42. एई तो तोमार प्रेम...

एई तो तोमार प्रेम, ओगो हृदयहरण।
एई-ये पाताय आली नाचे सोनार वरन।
एई-ये मधुर आलस भरे
मेघ भेसे याय आकाश परे,
एई-ये वातास देहे करे अमृत क्षरण।
एई तो तोमार प्रेम, ओगो हृदयहरण।

प्रभात-आलोर धाराय आमार नयन भेसेछे।
एई तोमारि प्रेमेर वाणी प्राणे एसेछे।
तोमारि मुख ओई नुयेछे,
मुखे आमार चोख थुयेछे,
आमार हृदय आज छुंयेछे तोमारि चरण।

चहुँ ओर प्रेम तेरा है मेरे चित्ताचोर
सुनहरी किरणें पात पात नाचे बन मोर।
मोहक स्नेहिल मोह भरे
मेघ व्योम विद्रोह करे
पवन देह स्पर्श कर अमृत से करे विभोर
चहुँ ओर प्रेम तेरा है मेरे चित्ताचोर।

प्रातः प्रभा में मेरी दृष्टि लुप्त हो रही
तेरी प्रेम वाणी प्राण में सुप्त हो रही।
आज तेरा मुख भी झुके
मेरे सम्मुख आँख रुके
मन मेरा तेरे आज चरण छुए हर भोर।
चहुँ ओर प्रेम तेरा है मेरे चित्ताचोर।

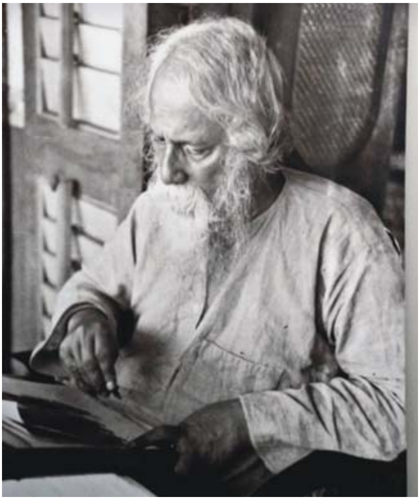

43. धाय येन मोर सकल...

धाय येन मोर सकल भालोबासा
प्रभु, तोमार पाने, तोमार पाने, तोमार पाने।
याय येन मोर सकल गभीर आशा
प्रभु, तोमार काने, तोमार काने, तोमार काने।

चित्त मम यखन येथाय थाके,
साड़ा येन देय से तोमार डाके,
यत वाधा सब टूटे याय येन
प्रभु तोमार टाने, तोमार टाने, तोमार टाने।

बहिरेर एई भिक्षा भरा थालि
एवार येन निःशेषे हय खालि,
अंतर मोर गोपने याय भरे
प्रभु, तोमार दाने, तोमार दाने, तोमार दाने।

हे बंधू मोर, हे अन्तरतर
ए जीवने या किछु सुन्दर
सकलि आज बेजे उठुक सुरे
प्रभु, तोमार गाने, तोमार गाने, तोमार गाने।

दौड़ा आये-दौड़ा आये
समूचा प्यार दौड़ा आये
नाथ! तुम्हे पाने को तुम्हे पाने को तुम्हे पाने को।

पहुंचे जैसे सारी सारी
मेरे जगत की जटिल आशा
तुम्हे सुनाने को, तुम्हे सुनाने को, तुम्हे सुनाने को।

मन मेरा कहीं भी रुका हो
वो पुकारता तुम्हे सदा हो
बाधाएं टूटे सारी जब
जैसे एक पल में ही तब
आया नैया खिंचाने को, आया नैया खिंचाने को।

बाहर भीख से भरी थाली
जब हो जाये वो भी खाली
मेरे अंतस में भरा भाव
हे प्रभु! तेरा दान पाने को, तेरा दान पाने को।

हे मेरे बन्धु मेरे मित्र
तुम्ही मेरे चित्त अन्तरतर
इस जीवन में जो कुछ सुन्दर
आज बजे सब तेरे सुर में
हे प्रभु! सुनूँ तेरे गानों को, सुनूँ तेरे गानों को।

44. नयन आमार रूपेर पुरे

नयन आमार रूपेर पुरे,
साध मिटाए वेडाय घूरे,
श्रवण आमार गभीर सुरे
हयेछे मगन।

तोमार यज्ञे दियेछे भार
वाजाई आमि वांशी
गाने गाने गेंथे वेड़ाई
प्राणेर कान्नाहासि
एखन समय हयेछे कि
सभाय गिये तोमाय देखि
जय ध्वनि शुनिये याव
ए मोर निवेदन।

जग के आनंद यज्ञ का मिला निमंत्रण
धन्य हुआ धन्य हुआ यह मानव जीवन।
नयनों में रूप सारा भरा
इच्छा मिटाए घूर कर जरा
सुनकर मेरी गंभीर तान हुआ मगन
धन्य हुआ ...

तेरे इस यज्ञ में मिला मुझे यह भार
बजाऊं बांसुरी मैं निरंतर साभार
तुम्हारे हर गीत में गूँथ दूँ दिलकसी
और गूँथ दूँ प्राणों की रोती हंसी।

समय हुआ क्या अब बतलाओ
सभा जा देखूं क्या जतलाओ
जय कार सुनाऊं यही मेरा निवेदन
धन्य हुआ ...
जगते आनंदयज्ञे आमार निमंत्रण
धान्य हल धान्य हल मानव जीवन।

45. एवार नीरव करे दाओ...

एवार नीरव करे दाओ हे तोमार
मुखर कविरे।
तार हृदयवांशी आपनि केड़े
बजाओ गभीरे।

निशीथरातेर निविड़ सुरे
वांशिते तान दाओ हे पुरे
ये तान दिए अवाक कर
ग्रहशशीरे।

या-किछु मोर छड़िये आछे
जीवन-मरणे,
गानेर टाने मिलुक एसे
तोमार चरणे।

बहु दिनेर वाक्यराशि
एक निमिषे यावे भासि
एकला बसे शुनुव बाँशि
अकुल तिमिरे।

इस बार कर ही दो शांत हे मानव
इस जागृत कवि मुख में।
हृदय वेणु के तार तुम निकाल बजा
प्रेषित कर चिर सुख में।

काली निशीथ में ले तू गहरे सुर
बांसुरी में स्वर भर दे तू भरपूर
दे कर इस तान को कर तू अवाक्
चाँद तारों के रुख में।

जो कुछ मेरा यहाँ छूटा बचा है
जीवन मरण सम्मुख में।
वह सब गीतों में मिल कर आ जाए
तुम्हारे चरण सुख में।

उन दिनों की तुम्हारी यह शब्द राशि
सिमट जाए एक क्षण में अभिलाषी
बैठ अकेला सुनूँ वेणु अविनाशी
अगम तिमिर प्रभूत में।

46. मार माझे, असीम, तुमि

मार माझे, असीम, तुमि
वाजाओ आपन सुर।
आमार मध्ये तोमार प्रकाश
ताई एत मधुर।
कत वर्णे कत गंधे,
कत गाने, कत छंदे,
अरूप तोमार रूपेर लीलाय
जागे हृदयपुर।
आमार मध्ये तोमार शोभा
एमन सुमधुर।

तोमाय आमाय मिलन हले
सकलि याय खुले -
विश्वसागर ढेऊ खेलाये
उठे तखन दुले।
तोमार आलोय नाइ तो छाया
आमार माझे पाय से काया
हय से आमार अश्रु जले
सुन्दर विधुर।
आमार मध्ये तोमार शोभा
एमन सुमधुर।

सीमाओं में बंधे असीमित तेरे, बजाओ सुर।
मुझमें बसा देखो तुम्हारा प्रकाश, कितना मधुर।

कितने रंग कितनी गंध
कितने गीत कितने छंद
अरूप नाथ तेरे रूप की लीला, जग हृदयपुर।
मुझमें बसा देखो तुम्हारा प्रकाश, कितना मधुर।

तुम्हारे हमारे मिलन भेद सारे, खुल गए अब।
विश्व सागर में खेल लहरे ऊंचा, ये उठे जब।

बिन छाया तेरा प्रकाश
देह की मुझमे बस आस
हृदय से बहते अश्रु नीर अपरिमित, सुन्दर विधुर
मुझमें बसा देखो तुम्हारा प्रकाश, कितना मधुर।

47. झर आनंद आमार पर

झर आनंद आमार पर
तुमि ताई एसेछ नीचे।
आमाय नायिले त्रिभुवनेश्वर
तोमार प्रेम हत ये मिछे।

आमाय निये मेलेछे एई मेला
आमार हियाय चलछे रसेर खेला
मोर जीवन विचित्र रूप धरे
तोमार इच्छा तरिङ्गिछे।

ताई तो तुमि राजार राजा हये
तउ आमार हृदयलागि
फिरछ कत मनोहरण-वेशे
प्रभु नित्य आछ जागि।

ताई तो, प्रभु हेथाय एल नेमे,
तोमारि प्रेम भक्त प्राणेर प्रेमे
मूर्ति तोमार युगल-सम्मिलने
सेथाय पूर्ण प्रकाशिछे ह्य

प्रभु तुम्हारा आनंद है हमारे बाद
इसी लिए नीचे आई तुम्हारी याद
यदि मैं न होता ओ नाथ त्रिभुवनेश्वर
तुम्हारा प्रेम भी होता व्यर्थ तब मगर।

तूने ये मेला मेरे लिए ही लगाया
मेरे लिए ही ये सब खेला रचाया
जीवन मेरा विविध रूप में सजाया
तेरी इच्छाओं को यहाँ तरंगित कर
यदि मैं न .....

प्रभु तुम हो राजाओ के भी राजा
प्रभु तुम आन मेरे अंतस में बसे हो
कैसा मनोहारी लिए रूप सजाये
प्रभु नित्य प्रभावी जागृत वेश रचे हो।

उतर प्रभु तभी तो तुम आ यहाँ पधारे
तुम्हारी प्रेम भक्ति प्रेम प्राण हमारे
युगल मिलन की मूर्ति कैसे हम सँवारे
सदा पूर्ण प्रकाशवान हो अवसर
यदि मैं न होता.....

48. चित्त आमार हाराल आज

चित्त आमार हाराल आज
मेघेर माझखाने,
कोथाय छूटे चलेछे से
कोथाय के जानेच
बिजुली तार वीणार तारे
आघात करे वारे वारे
वुकेर माझे व्रज वाजे
की महाताने।
पुंज पुंज भारे भारे
निविड़ नील अन्धकारे
जड़ाल रे अंग आमार
छडाल प्राणेच
पागल हाओया नृत्ये माति
हल आमार साथेर साथि,
अट्टहासे धाय कोथा से-
वारण ना माने।

मन मेरा खो गया कहाँ
देखो बीच बादलों पर।
देख छूट चला यहाँ वहाँ
खींचता पता नहीं किधर।

विद्युत वीणा के तारों पर
बार बार आये प्रहार कर
वक्ष में मेरे वज्र सह कर
कैसाविशाल यह सुर स्वर।

विपुल राशि में स्थान स्थान
नील घने तिमिर का भान
लिपट मेरे अंग से आन
भरता प्राणों में अक्सर।

नाचती है पागल हवा
साथ साथ है रवां रवां
अट्टहास करती कहाँ
बंधनों को अब तोड़ कर॥

49. शेषेर मध्ये अशेष आछे...

शेषेर मध्ये अशेष आछे, एइ कथाटि मने।
आजके आमार गानेर शेषे, जागछे क्षणे क्षणे।

सुर गियेछि थेमे तवु
थामते येन चाय ना कभु,
नीरवताय वाजछे वीणा, विना प्रयोजने।

तारे यखन आघात लागे, वाजे यखन सुरे
सवार चेये वड़ो ये गान, से रय वहुदुरे।

सकल आलाप गेले थेमे
शांत वीणाय आसे नेमे,
संध्या येमन दिनेर शेषे, वाजे गभीर स्वने।

अंत में ही अंतहीन छिपा कहता है मेरा मन
आज मेरे गीत के अंत में मैं जागता हर क्षण।

सुर आपके थम गए तब भी
रोकना चाहता नहीं कभी
नीरवता में बजती मेरी वीणा, बिना प्रयोजन।
अंत में ही अंतहीन छिपा कहता है मेरा मन

वीणा के तारों पर चोट पड़ी, बजने लगी तान
पर रहता बहुत दूर बहुत दूर सबसे बड़ा गान।

देख सारे आलाप थम कर
शांत वीणा पर आये उतर
साँझ में दिवस का ले अंतिम पहर, लाया स्वर गहन।
अंत में ही अंतहीन छिपा कहता है मेरा मन

50. सभा यखन भान्वे...

सभा यखन भान्वे तखन शेषेर गान कि याव गेये।
हयतो तखन कंठहारा मुखेर पाने रव् चेये।
एखनो ये सुर लागे नि
बाजवे कि आर सेइ रागिणी,

प्रेमेर व्यथा सोनार ताने संध्यागमन फेलवे छेये।

एत दिन ये सेधेछि सुर दिने राते आपन मने
भाग्ये यदि सेइ साधना समाप्त हय एई जीवने
ए जनमेर पूर्ण वाणी
मानस वनेर पद्म खानि

भाषाव शेष सागर पाने विश्व गानेर धारा वेये।

सभा जब तक विसर्जित हो तब तक शेष गीत क्या गाऊं मैं
रूंधे कंठ से तब मुंह की ओर देखता रह जाऊं मैं
जब मेरी वह धुन नहीं लगेगी
पुनः वह रागिनी क्या बजेगी

यह प्रेम व्यथा सुनहरे सांध्य नभ में कैसे फैलाऊं मैं
सभा जब तक विसर्जित हो तब तक शेष गीत क्या गाऊं मैं

इतने दिनों जो सुर साधा मैनें दिन रात अपने मन में
भाग्य से मेरी यही साधना पूरी हो इसी जीवन में
इस जन्म की ये पूर्ण वाणी है
मानस वन की पद्म कहानी है

भावों के शेष सागर में, विश्व गान धारा बहाऊं मैं
सभा जब तक विसर्जित हो तब तक शेष गीत क्या गाऊं मैं

51. मन के, आमार कायाके

मन के, आमार कायाके,
आमि एके वारे मिलिए दिते,
चाई ए कालो छाया के।
ओई आगुने ज्वालिये दिते,
ओई सागरे तलिए दिते
ओई चरणे गलिये दिते
दलिये दिते मायाके
मन के आमार कायाके

येखाने याई सेथाय एके
आसन जुड़े वसते देखे
लाजे मरि, ल ओ गो हरि
एई सुनिविड छायाके
मनके आमार कायाके
तुमि आमार अनुभावे
कोथाओ नाहि वाधा पावे,
पूर्ण एक देवे देखा
सरिये दिए मायाके
मन के, आमार कायाके।।

अपने मन को निज तन को
इक बार मिलाना चाहूँ
काली छाया से इनको।
उसको आग में जला कर भी
सागर में भी डूबा कर भी
उसे चरणों में गला कर भी
दलन करूँ इस माया को
तन को मन को काया को।

जहाँ गया देखा था उसको
आसन पर ही था वो बैठा
लाज से मर गया मैं तब तो,
इस घोर शांत छाया को
तन को मन को काया को।

नहीं कोई प्रबाधा आये
मेरे मन में तेरा प्रभाव
पूर्ण देव दर्शन हो जाए
हटा नाथ इस माया को
तन को मन को छाया को।

52. आछे आमार हृदय आछे भरे

आछे आमार हृदय आछे भरे
एखन तुमि या-खुशी ताई करो।
एमनि यदि विराज अंतरे
वाहिर हते सकलि मोर हरो।
सव पिपासार येथाय अवसान
सेथाय यदि पूर्ण कर प्राण
ताहार परे मरुपथेर माझे
उठे रौद्र उठुक खरतर।

ऐई ये खेला खेलछ कत छले
ऐई खेला तो आमि भालोवासि।
एक दिकेते भासाओ आंखिजले
आरेक दिके जागियेतोल हासि।
यखन भावि सव खोयालेम वुझी
गभीर करे पाई ताहारे खुंजी
कोलेर थेके यखन फेल दूरे
वुकेर माझे आवार तुले धर।

भरा है मेरा मन भरा है
अब तुम जो चाहो वही करो।
इस तरह गर रहोगे अन्दर
तो बाहर रह सभी कुछ हरो।

मेरी पिपासा का यहीं हो जाय अवसान
और मेरे भी वहीं यदि निकल जाएँ प्राण
उठेगी वह प्रचंड धूप तब इस मरुपथ पर।

छल से यह जो खेल रहे तुम
इस खेल में आता है प्यार।
इक क्षण में भरते अश्रु नीर
इक क्षण देते खुशियाँ हजार।

जब लगता मुझे अब तो सब कुछ खो गया है
तब लगता सब कुछ पा मन शांत हो गया है
फेंको गोद से औ लगाओ मन से मन भर।

53. प्रभु गृह हते आसिले...

प्रभु गृह हते आसिले येदिन, वीरेर दल
सेदिन कोथाय छिल ये लुकानो, विपुल बल।
कोथाय वर्म, अस्त्र कोथाय,
क्षीण दरिद्र अति असहाय,
चारि दिक् हते एसेछे आघात, अनर्गल,
प्रभु गृह हते आसिले येदिन, वीरेर दल।

प्रभुगृह माझे फिरिले येदिन, वीरेर दल,
सेदिन कोथाय लुकाल आवार, विपुल बल।
धनुशर असी कोथा गेल खसि
शांतिर हासि उठिल विकशि,
चले गेले राखि सारा जीवनेर, सकल फल,
प्रभुगृह माझे फिरिले येदिन, वीरेर दल।

प्रभु के घर जिस दिन पहुंचा वीरों का दल
कहाँ छुपा हुआ था उस दिन यह विपुल बल।
कवच कहीं, कहीं पर अस्त्र
दुर्बल असहाय से शस्त्र
सभी दिशा से होते आघात अनर्गल
प्रभु के घर जिस दिन पहुंचा वीरों का दल।

प्रभु घर से जिस दिन लौटा वीरों का दल
कहाँ छुपा हुआ था उस दिन यह विपुल बल।
वाण कृपाण गिरे तब कहीं
हर्ष शांति का उदय वहीं
चले गए रख सब जीवन का सारा फल
प्रभु घर से जिस दिन लौटा वीरों का दल।

54. तारा दिने बेला ऐसेछिल...

तारा दिनेर बेला एसेछिल, आमार घरे
वलेछिल, एकटिपाशे, रईव पड़े
वलेछिल, देवता सेवाय
आमरा हव तोमार सहाय
या किछु पाई प्रसाद लव, पूजार परे

एमनि करे दरिद्र क्षीण, मलिन वेशे
संकोचेते एकटि कोणे, रइल एसे
राते देखि प्रबल हए
पशे आमार देवालये
मलिन हाते पूजार बली, हरण करे

दिन की बेला में वे आये थे मेरे घर
रहेंगे यहीं बोले वे कोई कोने पर
बोले प्रभु सेवा में आ
करूँ सहायता मैं यहाँ
खुश रहूँ पूजा बाद थोड़ा प्रसाद पाकर
दिन की ......

क्षीण हीन दरिद्र की भांति मलिन वस्त्र पहन
संकोच ग्रषित एक कोने में मेरा रहन
रात्रि में ललक हुई प्रबल
पूजा घर प्रवेश उस पल
मलिन हाथों से पूजा नैवेद्य को हर कर
दिन की ....

55. शरते आज कोन अतिथि...

शरते आज कोन अतिथि, एल प्राण द्वारे
आनंद गान गा रे हृदय, आनंद गान गा रे।
नील आकाशेर नीरव कथा
शिशिर भेजा व्याकुलता
बेजे उठुक आजि तोमार वीणार तारे तारे।

शस्य खेतेर सोनार गाने
योग दे रे आज समान ताने,
भासिये दे सुर भरा नदीर अमल जल धारे।
ये एसेछे ताहार मुखे
देख रे चेये गभीर सुखे,
दुयार खुले ताहार साथे बाहिर हये या रे।

शरद ऋतु में कौन आया आज मेरे प्राणों के द्वार
हर्ष के गीत गा रे मन आज ला आनंद के उद्गार।
नील गगन की कैसी खामोश कथा
शिशिर के कणों से बिखरी व्याकुलता
बज उठे आज तुम्हारी वीणा के झंकृत से तार तार।

उद्भिज खेतों के सुन्दर स्वर्ण गीत
सम ताल में साथ दे रहा संगीत
मोहक सुरों से मोह रही यह निर्मल सरिता जलधार।
शरद ऋतु में कौन आया आज मेरे प्राणों के द्वार।

आया कौन है आज तेरे सम्मुख
जो चाह रहा निहार एक गहन सुख
खोल द्वार तेरा बाहर आया रे साथ साथ ये प्यार
शरद ऋतु में कौन आया आज मेरे प्राणों के द्वार।

56. से ये पाशे...

से ये पाशे एसे वसेछिल, तवु जागि नि।
की घुम तोरे पेयेछिल, हतभागिनि।
एसेछिल नीरव राते
वीणा खानि छिल हाते
स्वप्न माझे वाजिये गेल, गभीर रागिनि।

जेगे देखि दखिन-हाओया, पागल करिया
गंध ताहार भेसे वेडाय आंधार भरिया।
केन आमार रजनी याय
काछे पेये काछे ना पाय
केन गो तार मालार परश वुके लागि नि।

वो आकर बैठा तेरे पास पर तू न जागी
ऐ हतभागिन तुझे कैसी नींद ये है लागी
नीरव इस अंध रात में
आया ले वीणा हाथ में
सपनों में बजाता आज गहन राग वैरागी

बारिश की दखिनी पवन मुझे पागल करती है
तेरी महक आगे बढ़ अँधेरे को भरती है
कैसे मेरी रात कटी
पाकर भी मैं पा न सकी
माला का स्पर्श हृदय से न कर पाई अभागी
सपनों में बजाता आज गहन राग वैरागी

57. मन करि एड़खाने शेष

मन करि एड़खाने शेष
कोथा वा हय शेष
आवार तोमार सभा थेके आसे ये आदेश।

नूतन गाने नूतन रागे
नूतन करे हृदय जागे
सुरेर पथे कोथा ये याई ना पाई से उद्देश।

संध्यावेलार सोनार आभाय मिलिए निये तान
पूरवीते शेष करेछि यखन आमार गान।

निशीथ रातेर गभीर सुरे
आवार जीवन उठे पुरे
तखन आमार नयने आर रय ना निद्रालेश।

मन करता है अब यही शेष
पर क्या होता वह सत्य शेष
अब फिर आया मेरे लिए तेरी सभा से यही आदेश।

नए गीत संग नयी रागें
हृदय में ले नयापन जागें
सुर लय का ले जाये मार्ग कहाँ भूल गया कारण विशेष।

सांध्य बेला की स्वर्णिम आभा से मिश्रित मेरे नव तान
समर्पण अंतिम करें यहाँ मेरे मीठे मीठे ये गान।

गहन रात्रि के ये गहरे सुर
जीवन पूर्णता को मंजूर
नहीं रहता तब मेरे नयनों में और अधिक निन्द्रालेश।

58. चिर जनमेर वेदना...

चिर जनमेर वेदना, ओहे चिर जीवनेर साधना।
तोमार आगुन उठुक हे ज्वले,
कृपा करियो ना दुर्बल वले,
यत ताप पाई सहिवारे चाइ, पुड़े होक छाई वासना।

अमोघ ये ड़ाक सेई ड़ाक दाओ आर देरि केन मिछे।
या आछे वांधन वक्ष जड़ाये छिंडे पड़े याक पिछे।
गरजि गरजि शँख तोमार
वाजिय वाजिया उठुक एवार
गर्व टुटिया निद्रा छुटिया जागुक तीव्र चेतना।

जनम जनम की वेदना है या मेरी चिर जीवन साधना
तेरी अगन में जो मैं जल उठा
दुर्बल न दया कर मुझे समझना
यह ताप सह पाऊं और राख हो जाये मेरी वासना।

अमोघ तेरी पुकार व्यर्थ थी वो पुकार क्यों की अब देर
वक्ष के बंधन जकड़ रखे तूने टूट गिर हुए अब ढेर।
यह शंख तुम्हारा गरज गरज कर
यह बज रहा जोर से रह रह कर
दर्प टूटा निंद्रा छूटी जागृत हुई तीव्र यह चेतना।

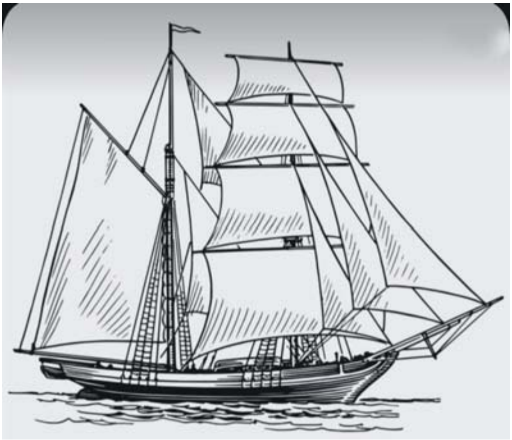

59. मेनेछि हार मेनेछि

मेनेछि हार मेनेछि।
ठेलते गेछि तोमाय यत आमाय तत हेनेछि।

अमार चित्त गगन थेके
तोमाय केउ ये राखवे ढेके
कोनो मतेइ सईवे ना से वारे वारेइ जेनेछि।

अतीत जीवन छायार मतो चलेछि पिछे पिछे
कत मायार वांशिर सुरे ड़ाकछे आमाय मिछे

मिल छुटेछे ताहार साथे
धरा दिलेम तोमार हाते
या आछि मोर एइ जीवने तोमार द्वारे एनेछि।

मान गया मैं हार गया
ठुकराने गया तुझे और स्वयं पर कर दिया वार।

मेरा हृदय नभ पर धरा
तुझे ढक कर रखना पडा
भूल न पाया तुझे याद दिलाया गया बार बार।

अतीत पीछे चला आ रहा छाया बन जीवन भर
माया बांसुरी के स्वर मुझे बुलाते ज्यूँ निरंतर।

मिल छूटा साथ तुम्हारा
थाम लिया हाथ तुम्हारा
जो कुछ था मेरे जीवन में लाया तुम्हारे द्वार।

60. या दियेछ आमार प्राण भरि

या दियेछ आमार प्राण भरि
खेद रवे ना एखन यदि मरि।
रजनी दिन कत दुःखे सुखे
कत ये सुर वेजेछे एइ वुके,
कत वेशे आमार घरे ढूके
कत रुपे नियेछ मन हरि
खेद रवे ना एखन यदि मरि।

जानि तोमाय निइ नि प्राणे वरि
पाइ नि आमार सकल पूर्ण कवे।
या पेयेछि भाग्य वले मानि
दियेछ तो तव परशखानि
आछ तुमि एइ जाना तो जानि
याव धरि सेइ भरसार तरी
खेद रवे ना एखन यदि मरि।

स्वामी तूने मुझमे कितने प्राण भरे
मनवा अब मरने का दुःख क्यूँ करे
दिन रात कितने सुख दुःख के आये
अंतस में किसने मधुर सुर बजाये
कई भेष बदल बदल घर में जाये
कितने रूप लिए तुम चित्त को हरे
मनवा अब मरने का दुःख क्यूँ करे।

जानता हूँ जब तुम प्राण न भरोगे
सकल अभिलाषाएं पूर्ण न करोगे
जो पाया वही भाग्य मेरा होगा
स्पर्श कर तूने दिया मान अनोखा
और तुम्हें इतना ही जाना भोगा
मेरी नैया तेरे भरोसे तरे
मनवा अब मरने का दुःख क्यूँ करे।

61. आज वरि झरे झर झर...

आज वारि झरे झर झर भरा बादरे।
आकाश भाडा आकुल धारा कोथाओ ना धरे।
शालेर वने थेके थेके
झड़ दोला देय हेंके हेंके
जल छूटे याय एँकेवेंके माठेर परे।
आज मेघेर जटा उड़िए दिए नृत्य के करे।

ओरे वृष्टि ते मोर छुटेछे मन, लुटेछे ओई झड़े
वुक छापिये तरंग मोर काहार पाए पड़े।
अंतरे आज की कलरोल
द्वारे द्वारे भाड़ाल आगल
हृदय माझे आगल पागल आजि भादरे।
आज एमन करे के मेतेछे बहिरे घरे।

झर झर झरता पानी बदरा काली छाये
नभ टूटी आकुल धारा कैसे रुक जाये
साल वन में रुक रुक गिरे
झंझा के शोर से घिरे
खेतों पर गिरता जल हुई पागल घटायें
आज मेघ भी नृत्य कर रहे खोल जटाएं।

ओरे वृष्टि ते मोर छुटेछे मन, लुटेछे ओई झड़े
वुक छापिये तरंग मोर का हार पाए पड़े।
अंतरे आज की कलरोल
द्वारे द्वारे भाड़ाल आगल
हृदय माझे आगल पागल आजि भादरे।
आज एमन करे के मेतेछे बहिरे घरे।

देख वृष्टि छूटे मन लुटे इस जल झड़ी में
मन उठे तरंग कैसे रोकूँ इस घडी में
हृदय उठी कैसी हिलोल
द्वार अर्गलायें खोल
हृदय आज पागल हुआ किसे किसे बताएं
मतवाला मन है घर बाहर किसे दिखाएँ।

62. रूप सागरे डूब दियेछि...

रूप सागरे डूब दियेछि अरूप रतन आशा करिः
घाटे घाटे घुरव ना आर भासिये आमार जीर्ण तरी।

समय येन हय रे एवार
ढेऊ खाओया सब चूकिए देवार
सुधाय एवार तलिए गिये अमर हये रव मरि।

ये गान काने ये ना शोना से गान सेथाय नित्य बाजे
प्राणेर वीणा निये याव सेइ अतलेर सभा माझे।

चिर दिनेर सुरटि वेंधे
शेष गाने तार कान्ना केंदे,
नीरव यिनी तांहार पाए नीरव वीणा दिव धरि।

रूप सागर में डूब गया अरूप रतन की आस लिए
घाट घाट पर मैं भटक रहा अपनी जर्जर नाव लिए

समय फिर से आया इस बार
चूकुं न सहूँ लहरों का वार
मर कर भी अमर रहूँ अमृत गोद में अपनी ठांव लिए।

जो गीत कभी सुना नहीं वही गीत नित है बज रहा
प्राणों की वीणा लिए वह इस अतल सभा में सज रहा।

बाँध सुर को दिवस प्रतीत में
वीणा तार रुदन शेष गीत में
तेरे चरणों में मौन आया मौन वीणा छाँव लिए।

63. संसारेते आर-याहारा आमाय...

संसारेते आर-याहारा आमाय भालोवासे
तारा आमाय धरे राखे वेंधे कठिन पाशे।

तोमार प्रेम ये सवार वाड़ा
ताइ तोमारि नूतन धारा
वांध नाको, लुकिये थाक छेड़ेइ राख दासे।

आर सकले, भुलि पाछे ताई राखे ना एका।
दिनेर परे काटे ये दिन तोमारि नेइ देखा।

तोमाय डाकि नाइ वा डाकि
या खुशि ताइ निये थाकिय
तोमार खुशी चेये आछे आमार खुशिर आशे।

और यहाँ जग में जितने भी लोग प्यार करते हम से
वे हमें अपने प्रेम बंधन में बांधे रखते कस के।

सबसे बड़ा है प्रेम तुम्हारा
बहती जिसमें अविरल धारा
इस दास को वह बांधे नहीं छुप छुप छोड़े हँस हँस के।

और यहाँ भूल सब मुझे जाए इस लिए हूँ अकेला
दिनोंदिन बीत रहेन आई तुझे देखने की बेला।

तुम्हे पुकारूं या न पुकारूं
साथ सदा खुश तुम्हे निहारूं
तेरी खुशियों में मेरी खुशियाँ रहती कहे मन बस ये।

64. लेगेछे अमल धवल

लेगेछे अमल धवल पाले मंद मधुर होओया।
देखि नाइ कभु देखि नाइ यमन तरणी वाओया।

कोण सागरेर पार हते आने
कोन सुदुरेर धन।
भेसे येते चाय मन,
फले येते चाय एइ किनाराय सब चाओया सब पाओया।

पिछेन झरिछे झर झर जल गुरु गुरु देया डाके
मुखे एसे पड़े अरुण किरण छिन्न मेघेर फांके।

ओगो कांडारी, केगो तुमि, कार
हासिकान्नार धन।
भेवे मरे मोर मन।
कोन सुरे आज बाँधिवे यंत्र कि मन्त्र हवे गाओया।

अमल श्वेत पाल से मंद मधुर समीर टकरा रही
देखि नहीं देखि नहीं ऐसी नौका बही जा रही

सागर के उस पार से कौन
लाय कौन दूर देश का धन
यही चाहता मेरा यह मन
इस किनारे जो चाहूँ पाऊं बात कही जा रही
अमल श्वेत पाल से मंद मधुर समीर टकरा रही

झर झर झरता जल गुर्र गुर्र मेघ ध्वनि बुला रही
चीर छिन वारिद सूर्य प्रभा मुख मंडल पर छा रही
अमल श्वेत पाल से मंद मधुर समीर टकरा रही

मांझी कौन और हो किसके
हास रुदन का तुम अपार धन
दुविधा में क्यूँ है मेरा मन
कौन यंत्र से कौन मन्त्र से सुर सितार बजा रही
अमल श्वेत पाल से मंद मधुर समीर टकरा रही

65. मुख फिराए रव...

मुख फिराए रव तोमार पाने
एइ इच्छाटि सफल करो प्राणे
केवल थाका, केवल चेये थाका
केवल आमार मनटि तुले राखा,
सकल व्यथा सकल आकांक्षाय
सकल दिनेर काजेरि माझखाने

नाना इच्छा धाय नाना दिक पाने
एकटि इच्छाटि सफल करो प्राणे
सेई इच्छाटि रातेर परे राते
जागे येन एकेर वेदनाते
दिनेर परे दिनके येन गधिं
एकेर सूत्रे एक आनंद गाने।

रहे तुम्हारी ओर घुमा मेरा मुख
इस प्राण कामना पूर्ति का मिले सुख
केवल साथ केवल साथ मैं पाऊं
उत्कर्ष मेरा मन रहे यह गाऊं
समस्त क्लेश और समस्त आकांक्षा
देखा दिन भर के कामों के सम्मुख।

विविध कामनाएं विविध दिशाओं में बहे
जीवन की इक ही इच्छा सफल रहे
रात्रि दर रात्रि यही कामना रहती
जागते सोते यह वेदना सहती
दिनों को दिनों से यूँ गूँथ गूँथ कर
एक सूत्र में बाँध एक गीत कहे।

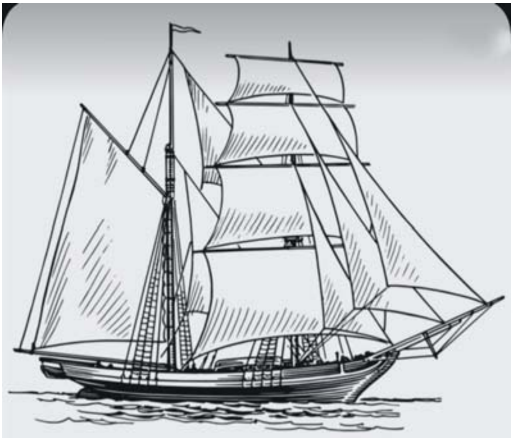

66. भेवेछिनु मने या हवार...

भेवेछिनु मने या हवार तारि शेषे
यात्रा आमार बुझि थेमे गेछे एसे।
नाइ बुझि पथ, नाइ बुझि आर काज
पाथेय या छिल फुरायेछे बुझि आज,
येते हवे सरे नीरव अन्तराले
जीर्ण जीवने छिन्न मलिन वेशे।

की निरखि आजि, ए की अफुरान लीला,
ए की नवीनता वाहे अन्तःशीला।
पुरातन भाषा मरे एल यवे मुखे
नवगान हये गुमरि उठिल वुके,
पुरातन पथ शेष हये गेल येथा
सेथाय आमारे आनिले नूतन देशे

काम पूरा हुआ या बचा मन सोच रहा यहाँ पर
यात्रा मेरी समझ समाप्त हो रही आज पहुँच कर
न कोई रास्ता समझ पाया, न समझा कोई काज
राह से उतर गाड़ी न जाने छूट गयी कहाँ आज
नीरव अंतराल में धीमे धीमे सरका मन
लेकर संग जीर्ण मैला जीवन वेश निरंतर
काम पूरा हुआ या बचा मन सोच रहा यहाँ पर

आज क्या निहारूं और देखूं लीला अपरम्पार
आज कैसी नवीनता अन्तःस्थल छाई इस बार
सम्मुख मेरे जब पुरातन भाषा लुप्त हो जाए
नव गीत हृदय में उठते बैठते सुप्त हो जाए
देखो पुरानी राहें समाप्त हुई यहाँ पर आकर
पहुँच मेरे अन्यतम नूतन देश के द्वार तत्पर
काम पूरा हुआ या बचा मन सोच रहा यहाँ पर

67. गान गाओयाले आमाय...

गान गाओयाले आमाय तुमि कतइ छले ये,
कत सुखेर खेलाय, कत नयन जले हे।

धरा दिए दाओ ना धरा
एस काछे, पालाओ त्वरा
परान कर व्यथाय भरा, पले पले हे।
गान गाओयाले एमनि करे, कतइ छले ये।

कत तीव्र तारे, तोमार वीणा साजाओ ये,
शत छिद्र करे जीवन वांशी वाजाओ हे

तव सुरेर लीलाते मोर
जनम यदि हयेछे भोर
चुप करिए राखो एवार चरण तले हे
गान गाओयाले चिर जीवन कतइ छले ये।

गीत गवाए मुझसे तुमने, कितने छल से
कभी सुख से खेले कभी नयन भरे जल से।

आ हाथ फिर भी न पकड़ाओ
पास आकर दूर हो जाओ
व्यथा भरे प्राणों में आओं, तुम हर पल रे
गीत गवाए ऐसे तुमने, कितने छल से

कितने तेज सुर से वीणा निज सजाते हो
सौ सौ छेद कर बंशी अपनी बजाते हो।

सुर की इस लीला से स्वामी
मेरी सुबह कर अन्तर्यामी
मौन इसे रखना जग स्वामी, निज पग तल में
गीत गवाए हैं जीवन भर, कितने छल से।

68. बोरिशो धरा माझे ...

अंत में : गीत बितान से मेरी प्रिय रचनाः

बोरिशो धरा-माझे शान्तिरो वारि
शुष्को हृदयो लोए आछे दूनारैये उर्ध मुखो नरनारी।

ना थाके अन्धोकार, ना थाके महापाप
ना थाके शोको परिताप
हृदयो बिमलो होक, परान सबाल होक
विघ्नों दाओ अपोसारी।

केनो ए हिन्ग्सादेस केनो ये छाद्मोभेश
केनो ये मान ओभिमान
बितारो बितारो प्रेम पाषाणोंहृदये
जयो जयो होक तोमारी।

जग में बरसा शांति नीर सुखकारी
हृदय शुष्क हो चले, उद्विग्न है जग में उर्ध्व मुख नर नारी

जग में अब न कोई हो अंतस्ताप
न हो कोई महा पाप, न शोक ताप
शुद्ध विमल मन हो, प्राण सबल हों, विघ्न छूटें अहंकारी
जग में बरसा शांति नीर सुखकारी

क्यूँ इतनी हिंसा, क्यूँ इतना धोखा, क्यूँ इतनी बेईमानी
क्यों ये मान अभिमान का दर्प लिए नर बना अभिमानी
इस पत्थर के दिल में प्रेम बसा, जय जय होगी तुम्हारी
जग में बरसा शांति नीर सुखकारी

69. आज धानेर खेते....

एक और कविता :

आज धानेर खेते रोद्र-छायाय लुकोचुरी खेला

आज धानेर खेते रोद्र-छायाय लुकोचुरी खेला रे भाई
नील आकाशे के भासाले सादा मेघेर भेला रे भाई
लुकोचुरी खेला ॥1॥

आज भ्रमर भोले मोधु खेते-उड़े बेड़ाय आलोय मेटे
आज किसेर तरे नदीर चरे चखा-चखीर मेला ॥2॥

ओरे, जाबो ना आज घरे रे भाई, जाबो ना आज घरे
ओरे, आकाश भेंगे बाहिर के आज नेबो रे लूट करे
जेन, जोयार जले फेनार राशि बाताशे आज छुटछे हासि
आज बिना काजे बाजिये बाँसि काटबे सकल वेला ॥3॥

छांव का खेल !!!

· धान खेत में सुनो रे, धूप छांव का खेल
नीले गगन में किया किसने, श्वेत मेघ का मेल
रे भाई धूप छांव का खेल, धूप छांव का खेल

मधुप भूले आज मधुपान, उड़े ज्योति की ओर
नदी किनारे क्यों है भाई, चकवा चकवी जोर
रे भाई धूप छांव का खेल, धूप छांव का खेल

भैया सुनो जाएंगे न घर, अब घर न आय लौट
भैया तोड़ आकाश सारा, प्रकृति लूट कर लौट
फेनिल लहर उच्च तरंग की, हँस दे सुरभि हथेल
बिन कारण आज बजा बंशी, पूर्ण दिन दे उड़ेल
रे भाई धूप छांव का खेल, धूप छांव का खेल

◀ ◀ ▶ ▶

राम गोविंद

पटकथा, कहानी लेखक (बागबान)

प्रिय सुरेश जी!

आपकी लेखनी से प्राप्त होने वाले आनंद की फुहार गाह बगाहे पड़ती ही रहती है। आपने देवभाषा संस्कृत में भी अपनी पहुंच और प्रतिभा से हिन्दी की श्री वृद्धि में जो योगदान किया है वह सराहनीय है। आपने कवि कुल रवि गुरुदेव रवीन्द्र के ६८ गीतों का छंदबद्ध अनुवाद करके एक पुस्तक रूप में हिन्दी साहित्य की समृद्धि में जो योगदान किया है जो मेरी भी जानकारी में प्रथम प्रयास है आपका अभिनंदन। हमारी काव्य अमराई में काव्य कोकिल रवी बाबू के गीत गूँजेंगे इस आनंद की अनुभूति के लिये आपको ढेर सारी शुभकामना। उक्त पुस्तक का सहर्ष स्वागत होगा इस आशा और आपके प्रति प्रशंसा भावना सहित आपका–

१२ मई २०२०

राम गोविंद

गिरधारी सिंह गहलोत 'तुरंत' बीकानेरी

(प्रसिद्ध गजलकार बीकानेर)

आदरणीय सुरेश चौधरी जी की पुस्तक ''अड़सठ शरद'' जो कि गुरूदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के बांग्ला गीतों का छंदबद्ध भावानुवाद है, हिंदी पाठकों के लिए खुशखबरी लेकर आ रही है। मैंने इसके कुछ गीतों को पढ़ा है, चौधरी जी ने अनुपम कार्य किया है। छंदबद्ध गीत रूपांतरण अत्यंत कठिन कार्य है, जहाँ गीत के भाव में कोई परिवर्तन न करते हुए छंद के शिल्प को भी निभाना पड़ता है। अधिकांश लेखक भावानुवाद तो करते हैं लेकिन मुक्त छंद में, जो आसान होता है। आदरणीय सुरेश जी जुझारू प्रकृति के लेखक हैं और जीवन में अनेक कठिन कार्य किये हैं, चुनौतियां स्वीकार करना इनकी आदत है, यह कार्य भी चुनौतीपूर्ण था, जिसे इन्होने बखूबी निभाया है। आशा करता हूँ हिंदी पाठकों द्वारा इस पुस्तक का स्वागत होगा। लेखक को पुस्तक की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

— गिरधारी सिंह गहलोत 'तुरंत' बीकानेरी

रामेश्वर नाथ मिश्र "अनुरोध"

(प्रख्यात साहित्यकार, कवि)

आश्वस्ति

श्री सुरेश चौधरी कोलकाता महानगर के अत्यंत शिष्ट साहित्यिक व्यक्तित्व हैं। इनकी साहित्य की एक से अधिक विधा में गतिविधि देखने को मिलती है। इनकी कई पुस्तकें प्रकाश में आ चुकी हैं जिन्होंने अपना विशिष्ट पाठकवर्ग तैयार किया है।

चौधरी जी निरन्तर लेखन–कार्य करते आ रहे हैं। इधर उन्होंने विश्वकवि गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर की रचना–सृष्टि पर दृष्टि डाली है और उसमें से कुछ चुनी हुई रचनाओं का हिन्दी में अनुवाद प्रस्तुत किया है।

चौधरी जी ने सहज, सुबोध, सरस और सुन्दर शब्दावली में गुरुदेव की बंगभाषा की विशिष्ट रचनाओं को हिन्दी भाषा में अनूदित कर हिन्दी–जगत को अपनी साधना का फल इस पुस्तक के रूप में प्रदान किया है। मैं पूर्ण रूप से आश्वस्त हूँ कि उनकी और भी रचनाएँ समयानुसार प्रकाशित होकर हिन्दी के सुधी पाठकों को आनन्दित करेंगी।

–रामेश्वरनाथ मिश्र 'अनुरोध'

२६–११–२०२० कोलकाता

प्रिय श्री सुरेश जी चौधरी,

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि आपके जीवन की अड़सठवीं जन्म गांठ पर आपकी सताइसवीं पुस्तक आ रही है। यह हमारे लिए और मारवाड़ी समाज के लिए भी गौरव की बात है। पुस्तक का विषय भी अत्यंत गंभीर और दायित्व पूर्ण है। रवींद्रनाथ ठाकुर की पद्य रचनाओं का अनुवाद और बहुत से लोगों ने किया होगा परंतु आप द्वारा छंदमय अनुवाद निश्चित रूप से अति सराहनीय है।

ईश्वर आपको इसी तरह रचनाशील रखे। आप स्वस्थ रहें, मस्त रहें। आप शतायु हों, यही परमात्मा से मनाता हूं।

आपका शुभचिंतक,

डॉ. सांवरमल सांगानेरिया

गुवाहाटी

सुरेश चौधरी 'इंदु' की अमूल्य प्रस्तुति
अड़सठ शरद

दो दर्जन से ज्यादा पुस्तकों के लेखक सुरेश चौधरी 'इंदु' जी के बहुआयामी व्यक्तित्व का अंदाजा आप इसी बात से लगा सकते हैं कि इन्होंने ग्रेजुएशन साइंस स्ट्रीम से किया और फिर चार्टर्ड अकाउंटेंट बन गए। कॉमर्स और साइंस अध्ययन की दो अलग धाराएं हैं। अगर बोलचाल की आम भाषा में कहें तो उत्तर और दक्षिण। इसलिए बहुत कम लोग आपको ऐसे मिलेंगे जो ऐसा कर पाते हैं। बिल्कुल ऐसी ही विविधता इनके लेखन में है अब तक ये मूल रूप से अध्यात्म, धर्म और दर्शन पर लिखते रहे हैं, देशाटन पर भी लिखा है, छंदबद्ध कविताएं लिखीं हैं और अब कविगुरु रवींद्रनाथ टैगोर की बांग्ला कविताओं का हिंदी में अनुदित छंद संग्रह पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर दिया।

आदरणीय सुरेश जी को पढ़ने से पहले यह जान लेना जरूरी है कि अगर आप इन्हें खालिस मनोरंजन या टाइमपास के लिए पढ़ रहे हैं, तो फिर इनका लेखन आपके लिए नहीं है। इनका लेखन उन पाठकों के लिए है जो एकरसता से ऊब चुके हैं। साहित्य जगत में कविता के नाम पर जो कुछ उबड़–खाबड़ परोसा जा रहा है, उससे अलग कुछ चाहते हैं। जो लोग अपने विचारों में नयापन लाना चाहते हैं, विचारों को मंथन के लिए उकसाना चाहते हैं, अपने शब्द भंडार को समृद्ध करना चाहते हैं और हमारी समृद्ध संस्कृति व भाषा परंपरा से रूबरू होना चाहते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक की रचनाएँ हवा के ताजा झोंके की मानिंद हैं.उम्मीद ही नहीं अपितु पूरा विश्वास है कि यह संग्रह हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर प्रमाणित होगा।

शिखर चंद जैन

प्रेरक पुस्तकों, बालसाहित्य,

राजस्थानी व्यंग्य के लेखक व स्तंभकार

आपकी पुस्तक के लिए शुभकामनाओं सहित

गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर पूरे देश का गौरव हैं, मगर चाहे अनचाहे उनकी सांस्कृतिक विरासत बांग्ला भाषा भाषियों तक सीमित होकर रह गई है। उनकी कृतियों का हिन्दी में रुचिकर अनुवाद न होना, अवश्य ही इसका एक कारण रहा होगा। ऐसे में हिंदी के प्रतिष्ठित साहित्यकार, श्री सुरेश चौधरी द्वारा गुरुदेव के गीतों का बांग्ला से हिंदी में छंदबद्ध अनुवाद का प्रयास निसंदेह एक सराहनीय और सार्थक कदम है। कविता का अनुवाद आसान नहीं होता, और छंदबद्ध अनुवाद तो एक अत्यंत कठिन कार्य है, किन्तु सुरेश चौधरी एक कठिन काम को सरलता से करते दिखाई देते हैं। यह अनुवाद गेय भी है और रुचिकर भी। उनका यह प्रयास न केवल भारतीय साहित्य में एक लम्बी रिक्तता को भरने जैसा है बल्कि यह भारत की संस्कृति को एक विस्तार प्रदान करेगा, उसे और समृद्ध करेगा, ऐसा मेरा निश्चित मत है। अनंत शुभकामनाएं।

– यशपाल सिंह यश

शुभकामना

कवि गुरु रवीद्रनाथ ठाकुर अपने देश के ऐसे पहले किसी भी भाषा के कवि हुए हैं जिन्हें साहित्य का नोबेल पुरस्कार मिला है। रवीद्रनाथ बहुमुखी प्रतिभा के धनी रहे हैं और उन्होंने जीवन के विविध ा पक्षों पर अपनी लेखनी चलाई है और न सिर्फ साहित्य की किसी एक विधा में बल्कि लगभग सभी विधाओं में अपनी समर्थ उपस्थिति भी दर्ज कराई है।

उनकी रचनाओं का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद भी हुआ है और खासतौर से उनके गीतों का भी। रवीद्र संगीत तो बंगाल के जन–जन के मानस में रचा–बसा है। रवीद्र के गीतों का अनुवाद वैसे तो हिंदी में भी कई लोगों ने किया है और जहां तक मैं जानता हूं उनके गीतों का अनुवाद तथा फिर गायन भी दाऊलाल कोठारी जी लगातार करते रहे हैं। लेकिन उनके 68 गीतों का छन्दों में अनुवाद आदरणीय सुरेश चौधरी जी ने बड़े ही मनोयोग से किया है। उनकी यह 27वीं प्रकाशित हो रही पुस्तक है, जिसमें 68 गीत वे अपने 68 वें जन्मदिन पर गुरुदेव रवीद्रनाथ को श्रद्धा–स्वरूप निवेदित कर रहे हैं।

मुझे विश्वास है कि उनका यह श्रमसाध्य अनूदित गीतों की पुस्तक का श्रद्धा–पुष्प साहित्य जगत में अपनी सुरभि से पाठकों को सुवासित और हर्षित करेगा।

मेरी असीम शुभकामनाएं...

रावेल पुष्प
साहित्य संपादक : वैचारिकी
(अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका)
एवं
मानद सदस्य
पश्चिम बंग हिंदी अकादमी
ईमेल : rawelpushp@gmail.com
मो. 9434198898

शुभकामना

महत्ता प्रयास की होती है और आदरणीय सुरेश चौधरी जी ने जो प्रयास किया है, वह श्लाघनीय है। महाकवि रवीन्द्र जी की 68 रचनाओं का छंदबद्ध अनुवाद सहज ही सरल कार्य नहीं है। मेरी अपनी मान्यता है कि हिन्दी के पाठकों के लिये यह भावानुवाद न केवल सरस होगा, बल्कि उपयोगी भी होगा। अनेक लोग भाषा न जानने के कारण कविवर की रचनाओं का आनंद नहीं ले पाते हैं, जिसे सुलभ करने का कार्य आदरणीय सुरेश चौधरी जी ने किया है और आशा है कि पाठकों को यह पुस्तक पसंद आयेगी। मैं अपनी ओर से आदरणीय सुरेश चौधरी जी को हार्दिक बधाई देता हूँ एक सुन्दर एवं आकर्षक कार्य को सम्पन्न करने के लिये और शुभकामनायें भी प्रेषित करता हूँ कि पुस्तक पाठक को पंसद आये, साथ ही आपकी लेखनी निरन्तर चलती रहे, ताकि हिन्दी साहित्य की सेवा हो सके।

विश्वजीत 'सपन'

आदरणीय सुरेश चौधरी जी,

समकालीन साहित्यकारों में एक प्रख्यात लब्द प्रतिष्ठित साहित्यकारों में से एक हैं। आप से मेरा अत्याधिक स्नेहिल आत्मीय संबंध है। आपका लेखन का विस्तार सतरंगी वितान सा है। किसी भी भाव भाषा विषय गद्य हो या पद्य में संवर कर इनकी लेखनी जी उठती है। इनकी कलम उन सारे विविध आयामों के तारों की चमक को उकेर देती है जो इनके हृदय पटल पर यथार्थ और कल्पनाशीलता के धरातल पर भाव शब्दों में उगते रहते हैं। इनकी कविताओं के विकास और विस्तार की गहराई को तो कोई पढ़ कर ही समझ सकता है।

मेरा हृदय भी कवित्व कर्मसार है अतः आदरणीय सुरेश चौधरी जी की कविताएं मुझे बहुत पसंद आती है। इनकी कविताएं शुद्ध हिन्दी के प्रांजल शब्दों में होती हैं, जिसे पढ़ कर हमें गौरव का अनुभव होता है और लगता है कि तुलसी, जायसी, सूर या मीरा की पदावली को पुनः नये सिरे से पढ़ रहें हैं। वो युग अभी भी इनकी रचनाओं में आभ्यांतर की यात्रा कर रहा है। प्रज्ञा और मेधा के धनी प्रज्ञान देवत्त्व लिये आदरणीय की सृजनात्मकता मनुष्यता को परिलाक्षित करती है। अपने आत्मश्लाघा के सारे बंधन खोल कर प्रार्दुभाव से समर्पित निःस्वार्थ साहित्य सेवा में लगे रहते हैं। साहित्य यज्ञकुंड में अपनी लेखनी की हवन सामग्री डाल कर निरन्तर साहित्य पुंज को प्रज्वलित कर रहे हैं।

आपने अभी–अभी कविन्द्र रविन्द्रनाथ टैगोर की कविताएं अनुवाद कर ''अड़सठ शरद'' का अप्रतिम सृजन किया है। अड़सठ शरद – यह नाम अति सुन्दर एंव विलक्षण प्रतीत होता है। इस नाम में ही एक अलग सा सम्मोहन का आभास होता है। यह नाम जीवंत वंसत, जीवंत फागुआ और जीवंत सावन का अद्भुत सम्प्रेषण है, जो पतझर के बहार से प्रस्फुटित हुआ है, इस अड़सठ शरद के अवगुंठन में। विश्व कवि रविन्द्रनाथ की कविताओं को गहराई से समझ कर अनुवाद कर सृजन करना यह कोई साहित्य मर्मज्ञ ही कर सकते हैं, जो आप हैं, और आपने यह रचनात्मक सौन्दर्य कार्य को प्रमाणित किया है। आप कई कई गद्य पद्य संग्रह के विशिष्ट रचनाकार हैं।

आप वेदान्त पंडित संस्कृत काव्य श्लोक चेतना के अर्चक, शब्दों को पार सेआपार तक की सूक्ष्म तरंगना को प्रवाहित करते हुये आपने श्रेष्ठ ऋषि संवाद साअनुष्ठान उदाहरण प्रस्तुत कर कालजयी बना दिया है। अड़सठ शरद के प्रकृति को हम–सब पढ़ कर ही इसकी सृष्टि को जी पायेंगे। देखिये इनके द्वारा अनुदित कविन्द्र रविन्द्र की कविता का रुपान्तर–

जीवन जब जब शुष्क हो जाय
करुण जलधार बन जाना तुम।
जब सब माधुरी रस खो जाय
गीत सुधा के बरसाना तुम ।।
......शाही उत्सव में आना तुम।
......प्रचंड प्रकाश ले आना तुम।
करुण जलधार बरसाना तुम।।

इतना सरल सहज अनुवाद सरस बोलती हुई कविता, जो सीधे मन प्राण को छू लेती है। एक अंदर की पीर भरी आवाज छूटते हुये, बीते हुए सुन्दर पलों के आभासित करती चिन्तन।

क्या कहें .....कवित्व संत को जो स्वयं रचनाओं के वायुयान पर बैठ कर अंतरिक्ष की सैर करते हैं ।

आपके लिए मेरे हृदय के सादर उदगार –

सारस्वत सम्मान है
आप शारदे वरदान हैं।
भाव वाणी हृदय मुदित
हर दृष्टि से संज्ञान हैं।।

योग तपस्या शब्द साधना, हृदय हरि उपासना।
भाव गति मति के अन्दर, है साहित्यक रस रासना।।

इस पुनीत कार्य के लिये सादर सादर नमन एंव साधूवाद देती हूँ। आपके चैतन्य साहित्य लेखन को प्रणामप्रणाम आदरणीय।

ज्योति नारायण
हैदराबाद
मो. : ९४६०४२५५३४

अभिमत

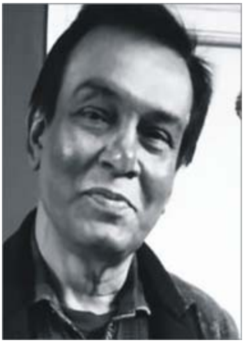

आदरणीय सुरेश चौधरी जी ऐसे सहृदय, अग्रज, अभिभावक तुल्य सहज मित्र हैं जो विचारों के दूसरे छोर पर खडे रहते हैं, कभी कभी वामपंथ से परेशान हो जाते हैं पर उनके भीतर मानवीयता और इंसानियत का ऐसा नीर क्षीर विवेक है, सहृदयता और काव्यात्मकता का सधा, सहज आवेग, संतुलन है, भारतीय धर्म परंपरा, दर्शन, चिंतन के मूल्यांकन की दृष्टि है जो ढोंगी, पाखंडी, अंधभक्तों से अलग करती है, एक बेलौस व्यक्तित्व, लाभ का कौशल जानते हुये भी अलग, कोलकाता के साहित्यिक टुच्चों की टुच्चागिरी के बीच मुस्कुराते रहने का धैर्य, पुराने समय के चार्टर एकाउंटेट, दर्जनों पुस्तकों के लेखक, सरस्वती और लक्ष्मी का मणिकांचन योग वाले इस मित्र के बारे में बहुत कुछ विशेषतायें हैं जिसे मैं नहीं जानता पर उनका बच्चा मन, विनम्र सादगी भरा व्यक्तित्व, दोस्तों के लिये सहज उपलब्धता और विरोधी विचारों को सुनने का साहस और बहुत कुछ है जो मुझे बाँधता है....अपने अग्रज मित्र को एक मानवतावादी वामपंथी मित्र का प्रणाम

8.09.20 **बृजमोहन सिंह**